आशीर्वचन

अर्हम्

जैन विश्व भारती तेरापंथ समाज से संबद्ध वह संस्था है, जहाँ ज्ञान की आराधना, ध्यान की साधना और साहित्य का प्रचार कार्य संपन्न होता है। उसका कामधेनु रूप प्रखरतर बनता रहे। शुभाशंसा।

आचार्य महाश्रमण

संजीवन बोल

जैन विश्व भारती तेरापंथ समाज की अखिल भारतीय स्तर की बहुउद्देश्यीय संस्था है। शिक्षा, साधना, शोध, सेवा, संस्कृति, संस्कार, साहित्य आदि क्षेत्रों में इस संस्था की अनेक योजनाएँ हैं। कुछ योजनाओं की क्रियान्विती हो चुकी है। जितनी क्रियान्विति हुई है उतनी ही नई संभावनाएँ फिर उसके साथ जुड़ती जा रही हैं। उन संभावनाओं को आकार देने के लिए समाज की छोटी-बड़ी, स्त्री-पुरुष हर ईकाई का दायित्व है कि वह अपनी संस्था को अपना, अपने समाज और देश का भविष्य मानकर उसके विकास में अपना योगदान दें।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका

कामधेनु

वर्ष 2 | अंक 1 | जनवरी-मार्च, 2012

परामर्श
डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

प्रकाशक
जितेन्द्र नाहटा, मंत्री
जैन विश्व भारती

संपादक
डॉ. वन्दना कुण्डलिया

संपादन-सहयोग
राजेन्द्र खटेड़

जैन विश्व भारती
पोस्ट बॉक्स नं. 8,
पोस्ट - लाडनूं - 341 306
जिला - नागौर, राजस्थान (भारत)
दूरभाष : +91-1581-222025 / 080
फैक्स : +91-1581-223280
इ-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com
वेबसाइट : www.jvbharati.org

मुद्रक
अमृताक्षर अनन्त
7/1 बी, ग्रान्ट लेन,
कोलकाता - 700 012

अनुक्रम

आशीर्वचन आचार्य महाश्रमण 1
संजीवन बोल साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा 2
उपोद्घात मुनि कीर्तिकुमार 4
अध्यक्षीय सुरेन्द्र चोरड़िया 5
संपादकीय डॉ. वन्दना कुण्डलिया 6
आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव / अमृत पुरुष अभिवंदना 7
आधार-स्तंभ सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला 9
दस्तावेज
अतीत के वातायन से / *मुनि मोहजीत कुमारजी* 11
प्रस्थान बिंदु / *सूरजमल गोठी* 12
प्रगति पदचिह्न
- जैन विश्व भारती के अंतर्गत जैन गणित पर शोध परियोजना का प्रारंभ 14
- सरावगी फाउंडेशन द्वारा 'एम.जी. सरावगी स्मृति कोष' की स्थापना 14
- आगम मंथन प्रतियोगिता - 4 का परिणाम घोषित 15
- विदेशियों ने लिया प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण 15
- होली स्नेह-मिलन कार्यक्रम का आयोजन 15
- आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार समर्पण समारोह 15
- जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 16
- "आगम मनीषी' प्रो. मुनिश्री महेन्द्रकुमार जी का मंगल भावना समारोह एवं 'शासन गौरव' मुनिश्री धनंजय कुमार जी के स्वागत समारोह का आयोजन 16
- चेन्नई एवं बंगलुरु में जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय पर चिंतन गोष्ठी आयोजित 17
- जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का 22वां स्थापना दिवस समारोह 18
- दैनिक भास्कर समूह द्वारा आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर के विद्यार्थियों की सहभागिता 19
- जैन विद्या परीक्षाओं का परिणाम घोषित 20

विश्व पटल पर जैन विश्व भारती
विदेश स्थित केन्द्रों की विभिन्न गतिविधियाँ 21
साहित्य
- जीवन शैली और स्वास्थ्य 23
- तिमाही के दौरान प्रकाशित साहित्य 25
- जैन विश्व भारती की साहित्य संपोषण योजना 26
- मंतव्य 27

अर्हता को अधिमान
- जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति प्रो. लालचंद सिंघी पीएच.डी. की उपाधि से सम्मानित 28

प्रवर्धित परिवार : जैन विश्व भारती के नए सदस्य 28
सुदृढ़ सोपान : जैन विश्व भारती परिसर में निर्मित भवन एवं कार्यालय 29
सिकता पर अंकित शिलालेख
- वसुधैव कुटुम्बकम् का प्रतिमान : जैन विश्व भारती / *कन्हैयालाल छाजेड़* 31
- मेरी चित्त समाधि का केन्द्र : जैन विश्व भारती / *सरोज सेठिया* 32
- अप्रतिम शांति का केंद्र : जैन विश्व भारती / *मिस आयाको* 32

नींव के पत्थर
- 'भारती भूषण' श्री खेमचंद सेठिया 33

दिशा पथ : वक्त / *धर्मचन्द चोपड़ा* 34
कृती कर्मी : निष्ठाशील कर्मी : श्री बाबूलाल गूजर 35
बाल मंच 36
- कुछ लाभदायक बातें / *आदित्य शर्मा* • एक चीज / *मंथन जैन*
- स्वप्न परी / *मालविका सुथार*
- पेंसिल निर्मित कृती / कार्तिक धनावत

उपोद्घात

आचार्य तुलसी मानवता के मसीहा और युगप्रधान आचार्य थे। वे जैन तेरापंथ के आचार्य होते हुए भी पूरी मानवता के आश्रय स्थल बने हुए थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में न केवल तेरापंथ के विकास और सुरक्षा पर ध्यान दिया, अपितु पूरे जैन धर्म की संस्कृति, साधना, शिक्षा, शोध, समन्वय आदि को भी अपने कर्तृत्व और कौशल से सुरक्षित और संवर्धित करने का भरसक प्रयत्न भी किया। उसी का मूर्त रूप है – जैन विश्व भारती।

जैन दर्शन विश्व के प्रसिद्ध दर्शनों में एक है। इस दर्शन में भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित सत्य का दर्शन होता है और उसकी सुरक्षा ही जैन धर्म की सुरक्षा है। जैन विश्व भारती के अंतर्गत जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय एवं समण संस्कृति संकाय के द्वारा प्राच्य विद्या (संस्कृत, प्राकृत), जैन विद्या के अनुसंधान और अध्ययन-अध्यापन का कार्य किया जा रहा है। जैन शास्त्र शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थी वर्ग में आध्यात्मिक और भावनात्मक शिक्षा की दृष्टि से भी जीवन विज्ञान के द्वारा शिक्षा जगत में सार्थक प्रयास किया जा रहा है।

साधना की दृष्टि से अनेक पद्धतियाँ प्रचलित हैं। उनमें एक प्रमुख पद्धति है – प्रेक्षाध्यान, जिसके माध्यम से आत्मशुद्धि की साधना की जाती है और शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक आवेगों से मुक्ति प्राप्त होती है। जैन विश्व भारती में आत्मशुद्धि की दृष्टि से यह कल्याणकारी प्रवृत्ति है। अनेक साधक एवं विदेशी पर्यटक भी इस अभियान से जुड़कर आत्मतोष का अनुभव करते हैं।

जैन विश्व भारती में जैन कला की सुरक्षा की दृष्टि से तुलसी कला प्रेक्षा नामक संग्रहालय निर्मित है, जिसमें साधु-संस्था द्वारा चित्रित-निर्मित कलात्मक वस्तुओं का प्रदर्शन किया गया है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पूरे जैन समाज में इस दृष्टि से यह एकमात्र संग्रहालय है जो जैन दर्शन, तत्त्व, धर्म के सिद्धांतों को कला के माध्यम से सुरक्षित किए हुए है।

लौकिक दृष्टि से संस्था के द्वारा सेवा, सहयोग का कार्य किया जाता है, जो संस्था को जनोपयोगी बनाने में सहायक बनाता है। जैन विश्व भारती अपने स्वरूप एवं उद्देश्य को व्यापक बनाए हुए है। संपूर्ण जैन समाज और जैन धर्म से भावनात्मक संबंध रखने वाले व्यक्तियों के लिए यह महत्त्वपूर्ण और गौरवास्पद स्थान है। स्वप्नद्रष्टा आचार्य तुलसी और प्रज्ञा पुरुष आचार्य महाप्रज्ञ की प्राण ऊर्जा से संचित यह संस्था जन-जन में आध्यात्मिक प्राणों के संजीवन और प्रस्फुटन का हेतु है।

आधुनिक युग का व्यक्ति आध्यात्मिकता से वंचित होता जा रहा है और भौतिक माहौल उसे अपनी ओर आकर्षित कर समस्या और दुख के द्वार तक ले जा रहा है। ऐसे में यह संस्थान उसे नई राह दिखाने में समर्थ है। अपेक्षा है इस संस्था से जुड़े व्यक्ति उसकी गरिमा और उपयोगिता को गहराई से अनुभव कर उसे अपने आत्मकल्याण का सशक्त साधन मानें और जैनत्व के संस्कारों को पुष्ट करने की दृष्टि से संस्था की आध्यात्मिक गतिविधियों से जुड़ें। यदि वर्ष में एक सप्ताह इस शांत और अध्यात्ममय परिसर में स्वाध्याय-ध्यान-साधनामय समय बिताया जाए तो संस्था उनके रूपांतरण के लिए लाभदायी सिद्ध हो सकती है।

मुनि कीर्तिकुमार
प्रभारी संत, जैन विश्व भारती

अध्यक्षीय

तेरापंथ धर्मसंघ की यशस्वी परंपरा इस धर्मसंघ के आचार्यों के विविधोन्मुखी अवदानों से निरंतर प्राणवान बनी हुई है। आचार्य भिक्षु से लेकर आचार्य महाप्रज्ञ तक ने अपने युगान्तरकारी अवदानों और लोककल्याणकारी कार्यों से इस धर्मसंघ को औदार्य प्रदान किया है। इस यशस्वी परंपरा के संवाहक आचार्य महाश्रमण ने भी अपने आचार, विचार और व्यवहार से तेरापंथ धर्मसंघ को नवीन उन्मेष दिए हैं।

आचार्य महाश्रमण के देदीप्यमान जीवन के पचास वर्ष पूर्ण होने के अवसर को संपूर्ण धर्मसंघ द्वारा अमृत महोत्सव के रूप में पिछले साल से पूर्ण हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। इस महान महोत्सव का महनीय उद्देश्य है पंचाचार के रूप में ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य की आराधना और संवर्धन। पंचाचार प्रधान इस अमृत महोत्सव के निमित्त विगत वर्ष से धर्मसंघ में ज्ञान की अभिनव धारा बही है, दर्शन की चेतना विकसित हुई है, चरित्र विकास के स्वर गुंजायमान हुए हैं, तप की प्रवृत्ति बढ़ी है और वीर्य की आराधना हुई है।त ेरापंथध र्मसंघके ए कादशमाधिशास्ताअ ाचार्यम हाश्रमणज ीस् वयंप ंचाचारक ेप्र तिमूर्तिअ ौरउ सके प्रबलप्र योक्ताहैं उ नकाअ मृतम होत्सवच तुर्विधध र्मसंघके अ ाध्यात्मिकउ न्नयनम ें जसप्र कारउ पयोगभूत बना है, वह स्तुत्य है, वंदनीय है, श्लाघनीय है।

अमृत पुरुष आचार्य महाश्रमण का चिंतन है कि अमृत महोत्सव के रूप में पूरे धर्मसंघ में आत्मोत्थान, आत्माराधना और आत्मकल्याण की दिशा में ऐसा विशिष्ट पुरुषार्थ हो, जिससे व्यष्टि से लेकर समष्टि तक के जीवन की दशा और दिशा बदल जाए। आचार्यप्रवर के इस चिंतन को मूर्त रूप देने के लिए धर्मसंघ सहित जैन विश्व भारती भी पंचाचार की आराधना के लिए कृतसंकल्पित हुआ, जिसके सकारात्मक परिणाम जनसम्मुख हैं।

अमृत महोत्सव के दौरान पंचाचार की आराधना के क्रम में विगत अवधि में जैन विश्व भारती ने ज्ञानाचार का पालन करते हुए विभिन्न योजनाओं और गतिविधियों का संचालन किया है। मैं मंगलकामना करता हूं कि आगामी समय में जैन विश्व भारती नवीन चिंतन और नवीन क्रियाकलापों की संयोजना कर पंचाचार की आराधना में और अधिक सक्रिय बनकर अमृत पुरुष के प्रति अपनी प्रणति भावना अभिव्यक्त करे तथा आचार्य महाश्रमण की आध्यात्मिक निर्देशना में विकास के नित नए आयामों को उद्घाटित करे।

सुरेन्द्र चोरड़िया

जैन विश्व भारती कामधेनु

संपादकीय

'कामधेनु 'क ाप ाँचवांअ ंकप ाठकोंक ेस ौंपतेह ुएए कस ुखदअ नुभूतिह ोर हीहै ।ल गभगए कव र्षप ूर्वज ैनवि श्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने जैन विश्व भारती की विविध गतिविधियों से तेरापंथ धर्मसंघ और समाज के साथ-साथ संपूर्ण देशवासियों एवं विदेश स्थित भारतीयों तथा भारतीय दर्शन एवं साहित्य में रुचि रखने वाले लोगों को अवगत कराने हेतु एक पत्रिका के प्रकाशन का दूरदर्शितापूर्ण निर्णय लिया। नियति के योग और उनके विश्वास से उस पत्रिका के संपादन का दायित्व मुझे मिला। पूज्यप्रवरों के आशीर्वाद तथा साध्वीप्रमुखाश्री की संजीवनी शक्ति से संबलित इस पत्रिका ने अपनी जीवन यात्रा प्रारंभ की और एक वर्ष की जो यात्रा पूरी की है, उसका श्रेय अनेक लोगों की शुभाशंसा और शुभेच्छाओं को जाता है।

पाठकों की प्रतिक्रियाओं से ज्ञात हुआ कि जनवरी-मार्च, 2011 में प्रकाशित कामधेनु के प्रवेशांक ने ही सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया तथा सभी वर्गों के पाठकों को इसके प्रत्येक आगामी अंक के लिए प्रतीक्षारत बनाया। अध्यक्ष महोदय के सुझावों और चिंतन के अनुरूप मैंने इस पत्रिका को एक नए कलेवर और अभिनव सामग्री से समृद्धक रनेक ाप ्रयासक ियाअ ौरप ्रवेशांकम ेंज ैनवि श्वभ ारतीके उ द्भव,क ल्पनाकारोंक ेउ दात्तस ोच,उ सके क्रियान्वयन की प्रक्रिया, उसमें क्रमशः निर्मित होने वाले आधार-स्तंभों तथा उसके प्रगति पदचिह्नों को रेखांकित किया, जो जैन विश्व भारती की स्थापना के उद्देश्यों एवं प्रयोजनों को प्रमाणित करने का एक प्रयास था। पत्रिका में प्रकाशित होने वाले साहित्यिक आलेख, सिकता पर अंकित शिलालेख, दिशा-पथ, पाठ-पृष्ठ जैसे अन्य स्तंभ भी जैन विश्व भारती के विविधोन्मुखी स्वरूप को उजागर करने के प्रयास रहे हैं।

किसी भी साहित्यिक-सामाजिक पत्रिका की सफलता और उपलब्धियों का मूल्यांकन प्रबुद्ध पाठक ही कर सकते हैं। मैंने अपनी क्षमता का पूर्णतः नियोजन कर इस कार्य का संपादन किया है, जिसमें प्रमुख हेतु रहा है गणाधिपति तुलसी, प्रज्ञापुरुष महाप्रज्ञ और तपोनिष्ठ आचार्य महाश्रमण की कृपा, जिसे मैं सदैव अपने अंदर महसूस करती रही हूं। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र जी चोरड़िया ने जिस विश्वास और अपेक्षा के साथ मुझे यह कार्य सौंपा, उस पर मैं कितनी खरी उतर सकी, इसका निर्णय तो पाठक ही करेंगे। पत्रिका के संपादन में डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह का परामर्श और संपादन सहयोगी के रूप में श्री राजेन्द्र खटेड़ का आत्मीय सहयोग चिरस्मरणीय बना रहेगा।

कामधेनु का यह पांचवां अंक भी पाठकों की अपेक्षाओं की पूर्ति करे और जैन विश्व भारती का एक समुचित प्रतिबिंब बने। इसी मंगलकामना और समर्पण भाव के साथ यह अंक प्रस्तुत है :

जिन्होंने पत्थर को इबादत के काबिल बनाया,
जिन्होंने तिनके को संबल का साधन बनाया,
उन्हीं श्रीचरणों में समर्पित है यह
जिन्होंने मुझ नाकाबिल को काबिल बनाया।।

डॉ. वन्दना कुण्डलिया

अमृत पुरुष अभिवंदना

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के विभिन्न चरणों की झलकियाँ

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादश अधिशास्ता आचार्य महाश्रमण के जीवन के पांच दशक पूर्ण करने के पावन अवसर को चतुर्विध धर्मसंघ विगत वर्ष से अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है। इसका ध्येय बना – ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य की आराधना। आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर आचार्य महाश्रमण के प्रति जैन विश्व भारती परिवार श्रद्धासिक्त भावों के साथ यह मंगलकामना करता है कि पूज्यश्री का जन-जन के आत्मोन्नयन का पवित्र भाव अमृत निधि बनकर संघ की अखंडता, तेजस्विता और पवित्रता को वर्धापित करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ के योगक्षेम में सहायक बने।

विगत वर्ष में चतुर्विध धर्मसंघ ने पंचाचार की आराधना और अनुपालना कर अमृत पुरुष की अभिवंदना एवं अभ्यर्थना की है। ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार की आराधना में तेरापंथ धर्मसंघ का श्रावक समाज एवं विभिन्न संस्थाओं एवं संगठनों ने अपना योगदान देकर आचार्यप्रवर के प्रति अपनी प्रणति अर्पित की है।

आचार्य महाश्रमण मानव कल्याणकारी भावनाओं से युक्त सृजनशील साहित्यकार के रूप में भी सुख्यात हैं। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से मानवता को अपने तपोमय जीवन की महान उपलब्धियों का उपहार प्रदान किया है। मौलिक एवं नवीन विचारों से युक्त उनकी रचनाएँ प्रत्येक आयु-वर्ग के पाठकों को समान रूप से प्रभावित करती हैं और उन्हें सत्पथ दिखाकर उनकी समस्याओं का निदान करती हैं। जैन विश्व भारती ने पंचाचार के अधीन ज्ञानाचार की आराधना कर पूज्यप्रवर के अमृत वर्ष को चिरकालिक बनाने का प्रयास किया है। इस संस्था ने आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा रचित शाश्वत मूल्यों से युक्त साहित्य का प्रकाशन कर उनमें अभिव्यक्त प्रखर चिंतनों, गूढ़ विचारों और ऋतंभरा प्रज्ञा से युक्त संदेशों को जन-जन तक पहुँचाया है और साथ ही उनकी मानवतावादी सोच, जनकल्याणकारी कार्यों और साधनाप्रसूत अनुभवों से मानव समाज को अवगत कराया है। जैन विश्व भारती आचार्य श्री महाश्रमण के साहित्य को संप्रसारित कर समाज के उन्नयन में सहायक बनी है।

साहित्य जगत की इस अनमोल धरोहर को जन-जन तक पहुँचाने हेतु जैन विश्व भारती ने आकर्षक एवं सुरुचिपूर्ण कलेवर में उनकी विभिन्न रचनाओं का प्रकाशन एवं पुनर्प्रकाशन किया है और अमृत महोत्सव वर्ष के दौरान विभिन्न शीर्षकों के अंतर्गत लगभग 90,000 प्रतियों का प्रकाशन एवं वितरण कर उनकी श्रेयस वाणी को समाज के हर वर्ग तक फैलाने का सद्प्रयास किया है।

जैन विश्व भारती ने संस्कार चैनल के माध्यम से आचार्यप्रवर के द्वारा रचित साहित्य की जानकारी जैन-अजैन सभी वर्गों के पाठकों को प्रदान की है। बुद्धिजीवियों एवं राजनेताओं को आचार्यप्रवर के सत्साहित्य से परिचित कराने हेतु देश के विभिन्न केंद्रीय एवं राज्य मंत्रियों, सांसदों, राज्यपालों, जैन विद्वानों आदि को जैन विश्व भारती के द्वारा साहित्य प्रेषित किए गए हैं। अमृत महोत्सव के अवसर पर देश के लगभग पचास विश्वविद्यालयों एवं पुस्तकालयों में अमृत पुरुष का साहित्य प्रेषित किया गया है। इसके साथ ही आचार्य प्रवर के साहित्य का बंगला, अंग्रेजी, मराठी, नेपाली आदि भाषाओं में अनुवाद भी किया गया है।

जैन विश्व भारती आचार्य महाश्रमण के सत्साहित्य को जन-जन को उपलब्ध करवाकर एवं अधिकतम प्रचार-प्रसार एवं प्रकाशन के संकल्प के साथ अमृत महोत्सव के पावन अवसर आचार्यप्रवर को अपनी श्रद्धासिक्त अभिवंदना करती है।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के रोमांचकारी क्षण

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला

गणाधिपति आचार्य तुलसी, युग प्रधान आचार्य महाप्रज्ञ एवं महातपस्वी आचार्य महाश्रमण की पावन सद्प्रेरणा एवं शुभाशीर्वाद से जैन विश्व भारती में पिछले तीन दशक से सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला में आयुर्वेदिक (देशी) शुद्ध एवं पूर्ण प्रामाणिक शास्त्रीय औषधियों का निर्माण हो रहा है। इस रसायनशाला के अंतर्गत आरोग्यम् आयुर्वेदिक चिकित्सालय भी जन सेवा कर रहा है। इसकी प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता से सभी परिचित हैं।

जैन विश्व भारती की सेवा विषयक प्रवृत्ति के अंतर्गत स्व. मुनि चंपालाल जी की स्मृति में वर्ष 1977 में आयुर्वेदिक औषधालय का शुभारंभ कर रसायनशाला के निर्माण की योजना तैयार की गई, लेकिन परिस्थितिवश कुछ समय पश्चात ही उस प्रवृत्ति को स्थगित करना पड़ा। कालांतर में इसी प्रवृत्ति को पुनः चलाने के उद्देश्य से वर्ष 1978 में रसायनशाला फार्मेसी एवं चिकित्सालय ओ.पी.डी. को शुरू किया गया। चार वर्षों के पश्चात वर्ष 1982 में इस प्रवृत्ति को संचालित करने का दायित्व श्री झूमरमल बैंगानी को सौंपा गया।

आगामी समय में तत्कालीन व्यावहारिक कठिनाइयों को देखते हुए दिनांक 16 दिसंबर, 1983 को एक स्वतंत्र ट्रस्ट का गठन कर सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला की स्थापना की गई और तब से जैन विश्व भारती के सेवा उपक्रम -- सेवाभावी कल्याण केन्द्र का संचालन और इसकी अर्थ व्यवस्था का संपूर्ण दायित्व इस रसायनशाला ट्रस्ट पर है।

रसायनशाला एवं औषधालय भवनों का निर्माण तेरापंथ समाज बीकानेर के द्वारा करवाया गया। संप्रति एक भवन में फार्मेसी एवं कार्यालय है तथा दूसरे भवन का उपयोग चिकित्सालय के रूप में किया जाता है, जिसमें अंतरंग आतुरालय के लिए 25 शैय्याओं की व्यवस्था की गई है।

रसायनशाला का ट्रस्ट बनने के बाद से ही श्री झूमरमल बैंगानी प्रधान न्यासी के रूप में इसका दायित्व संभाल रहे हैं। दायित्व संभालना तो एक बात है, वस्तुतः उन्होंने प्रधान न्यासी के रूप में इस सेवा उपक्रम को अपने जीवन का मिशन बना लिया है। उनका चिंतन रहा है कि इस प्रवृत्ति की सार-संभाल इस प्रकार की जाए कि यह इकाई आत्मनिर्भर बनकर चारित्रात्माओं एवं जन साधारण को उच्चतम स्तर की आयुर्वेदिक सेवाएँ उपलब्ध करा सके। इसीलिए इसकी स्थापना काल से ही उन्होंने अपना स्थायी आवास-स्थल भी जैन विश्व भारती के परिसर में स्थित सेवाभावी कल्याण केन्द्र को बना लिया है। अब अस्वस्थता के कारण उन्हें स्थायी रूप से मुंबई में रहना पड़ रहा है।

रसायनशाला के पास 345 प्रकार की मानक औषधियाँ तथा 37 प्रकार की स्वाम्य (प्रोपाइटरी) औषधियाँ निर्माण करने के लिए ड्रग मैनुफैक्चरिंग लाइसेंस प्राप्त है। इन औषधियों के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की बहुमूल्य औषधियाँ, रस, कूपी, पक्व रसायन, पर्पटी भस्म, पिष्टी, वटी, गुग्गुल, आसवारिष्ट, तेल, लौह मंडूर, अवलेह, क्वाथ, शोधित द्रव्य, सत्त्व एवं क्षार तथा विशिष्ट स्वाम्य औषधियों का निर्माण कुशल निर्देशन में उच्च स्तरीय गुणवत्ता नियंत्रण

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च
2012

पूज्यप्रवर को रसायनशाला के संबंध में जानकारी देते हुए प्रधान न्यासी श्री झूमरमल बैंगानी

पद्धति के साथ किया जाता है। यही नहीं, प्रत्येक औषधि विशुद्ध निर्माण प्रणाली के द्वारा निर्मित की जाती है, जिसके लिए राजकीय आयुर्वेदिक विभाग ने इस रसायनशाला को जी एम पी सर्टिफिकेट अर्थात विशुद्ध निर्माण पद्धति प्रमाणपत्र प्रदान किया है।

पथरी, वातरोग, अस्थमा, पाइल्स, सभी प्रकार के ज्वर, रक्तचाप, कैंसर, गृधसी (रिंगणवाय), अग्निमांद्य तथा दौर्बल्य आदि बीमारियों से राहत पाने के लिए इस औषधालय से लाभ प्राप्त करने वाले रोगियों की संख्या हजारों में है। यहाँ रोगियों की चिकित्सा का कोई शुल्क नहीं है। जहाँ ओ.पी.डी. में उपलब्ध औषधियाँ रोगियों को निःशुल्क दी जाती हैं, वहीं ओ.पी.डी. में अनुपलब्ध बहुमूल्य औषधियाँ चिकित्सक की पर्ची के आधार पर सशुल्क उपलब्ध कराने की व्यवस्था भी की जाती है। इस तरह सभी आयुर्वेदिक औषधियाँ रसायनशाला से उचित मूल्य पर प्राप्त की जा सकती हैं। औषधालय का कार्य समय प्रातः 9 बजे से अपराह्न 1 बजे तथा 1.30 बजे से सायं 5.30 बजे तक है।

औषधियों में प्रयुक्त होने वाली जड़ी-बूटियों में लगभग 20 प्रकार की जड़ी-बूटियाँ जैन विश्व भारती में उगाई जाती हैं और शेष बाहर से मंगवायी जाती हैं। रसायनशाला का मुख्य उद्देश्य शास्त्रीय विधान से प्रामाणिक एवं विश्वसनीय औषधियाँ निर्मित कर जन सामान्य की चिकित्सा सेवा करना है। रसायनशाला का दृष्टिकोण कभी व्यावसायिक नहीं रहा, इसलिए सीमित मात्रा में ही उत्तम किस्म की औषधियों का निर्माण करना इसका लक्ष्य रहा है। अतः सीमित खपत तथा सामान्य बिक्री व्यवस्था के तहत मांग के अनुरूप औषधियों का उत्पादन किया जाता है।

आयुर्वेदिक औषधालय में लगभग चालीस वर्ष के अनुभवी वयोवृद्ध वैद्य श्री संतोष कुमार शर्मा अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। साथ ही राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के स्नातक आयुर्वेदाचार्य युवा वैद्य श्री रामकुमार शर्मा की सेवाएँ भी बराबर उपलब्ध हैं।

यदि औषधियों का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता है तो बिक्री की सम्यक व्यवस्था भी करनी पड़ेगी। इस क्रम में अतिरिक्त उपकरण, अपेक्षित कार्यकारी पूंजी, प्रचार-प्रसार हेतु इलेक्ट्रोनिक मीडिया का उपयोग, अतिरिक्त कर्मचारियों पर खर्च आदि आवश्यक है, जो अर्थसापेक्ष है। इसके साथ ही सेवा की कीमत पर व्यावसायिक लाभ के लिए प्रयास करने पड़ेंगे।

अपेक्षा है कि जैन विश्व भारती इस सेवा इकाई में सेवा देने के लिए समाज के ऐसे लोग सामने आएँ जो आयुर्वेद में विशेषज्ञ हों और इस कार्य में रुचि रखते हों। वे रसायनशाला की गतिविधियों में सक्रिय योगदान देकर यहाँ के क्रियाकलापों तथा उत्पादों को उचित सम्मान दिलाने में योगभूत बनें।

सेवाभावी रसायनशाला में उपलब्ध बहुमूल्य औषधियाँ

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च
2012

अतीत के वातायन से

गतांक से आगे ....

मद्रास अधिवेशन में जैन विश्व भारती के संबंध में गहन विचार-विमर्श और चिंतन-मंथन हुआ। आचार्य तुलसी ने महासभा से आह्वान किया था कि वह उसके निर्माण और विस्तार का दायित्व संभाले, परंतु महासभा के पदाधिकारियों-ोइ समेंअ पनीअ समर्थताव्यक्तक ी।इ सकाप्र मुखक ारणथ ाा कउ सस मयम हासभाके न एभ वन निर्माण की योजना चल रही थी। यद्यपि आचार्य तुलसी को महासभा का यह प्रत्युत्तर अप्रिय लगा तथापि उन्होंने हार नहीं मानी और उनके मस्तिष्क में जैन विश्व भारती के निर्माण का चिंतन निरंतर चलता रहा।

आचार्य तुलसी ने सूरजमल गोठी को जैन विश्व भारती का संयोजक नियुक्त किया और उन्हें इस कार्य को आगे बढ़ाने का दायित्व सौंपा। गोठी जी ने जैन विश्व भारती के निर्माण हेतु स्थान के चयन, विधान के निर्माण और अर्थव्यवस्था के नियोजन के उद्देश्य से बंबई, कलकत्ता, दिल्ली, जयपुर, लाडनूं एवं सरदारशहर आदि क्षेत्रों की यात्राएँ कीं। उन्होंने सर्वप्रथम जैन विश्व भारती के विधान निर्माण के कार्य को प्रारंभ करते हुए अपने स्तर पर उसका एक प्रारूप तैयार किया तथा उसे मोहनलाल बांठिया और शुभकरण दस्साणी के सहयोग से अंतिम रूप प्रदान कर आचार्य तुलसी को निवेदन किया। पुनः सरकार के पास पंजीकृत कराने हेतु प्रयास प्रारंभ किया गया, परंतु उसके लिए संस्थापक सदस्यों के नामों की आवश्यकता थी। इसके लिए गोठी जी ने अपने पिता जयचंदलाल गोठी को जैन विश्व भारती का प्रथम सदस्य बनाया। इसके बाद जैन विश्व भारती की सदस्य संख्या में वृद्धि होती गई। सरकार द्वारा उसके विधान को भी मंजूरी प्रदान कर दी गई।

जैन विश्व भारती का दूसरा महत्वपूर्ण काम था उसके लिए स्थान का चयन। यद्यपि हैदराबाद मर्यादा महोत्सव में जैन विश्व भारती के क्षेत्र के संबंध में राजस्थान का निर्णय हो चुका था, किंतु स्थान का निर्णय शेष था। स्थान के निर्णय की दृष्टि से सूरजमल गोठी और हनुमानमल बैंगानी ने जोधपुर, बीकानेर, लाडनूं, छापर, सरदारशहर, सुजानगढ़ आदि स्थानों की यात्रा की और वहां के कार्यकर्ताओं से मिले। यात्राओं और वार्ताओं के बावजूद जैन विश्व भारती के लिए स्थान का निर्णय नहीं हो पाया। अंततः हनुमानमल बैंगानी ने कहा कि 'लाडनूं में रेलवे स्टेशन के सिग्नल के पास मेरी जमीन है, यदि वह जगह इस कार्य के लिए उपयुक्त हो तो उसे देने के लिए मैं सहर्ष तैयार हूँ।' उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि यदि आवश्यकता हुई तो वे इस जमीन से संलग्न अपने भाई की भूमि को भी समर्पित कर देंगे। हनुमानमल बैंगानी के इस प्रस्ताव का निवेदन आचार्य तुलसी को किया गया। अनेक विचार-विमर्श और चिंतन-मंथन के बाद जैन विश्व भारती को लाडनूं में ही स्थापित करने का निर्णय किया गया।

जैन विश्व भारती की परिकल्पना को साकार करने के लिए उसे लाडनूं में स्थापित करने के निर्णय के पीछे नियति का विशेष योग था। तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में लाडनूं का एक विशिष्ट स्थान रहा है। आचार्य भिक्षु से लेकर वर्तमान आचार्य तक के समय की अनेक विशिष्ट घटनाओं का संबंध लाडनूं से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से रहा है। सेवाभावी मुनिश्री चंपालाल जी का लाडनूं से विशेष लगाव भी था। वे यहाँ की हवा को दवा और पानी को दूध की संज्ञा देते थे। जैन विश्व भारती के लिए लाडनूं का चयन उनकी प्रसन्नता का हेतु बना। लाडनूं के नागरिक भी इस घोषणा से प्रसन्न हुए।

यद्यपि जैन विश्व भारती की स्थापना के लिए हनुमानमल बैंगानी ने अपनी भूमि प्रदान कर दी थी, पर वह भूमि क्षेत्रीय दृष्टि तथा भावी विकास की दृष्टि से कुछ कम उपयोगी एवं अपर्याप्त थी। इस हेतु लाडनूं के अनेक स्थानों का सर्वेक्षण हुआ और अन्य स्थान के लिए खोज चलती रही।

*(मुनिश्री मोहजीतकुमारजी द्वारा लिखित **जैन विश्व भारती का इतिहास** से उद्धृत)*

अगले अंक में जारी .....

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च
2012

कामधेनु जैन विश्व भारती

प्रस्थान बिंदु

सरदारशहर का प्रसिद्ध एवं धर्मनिष्ठ गोठी परिवार जैन विश्व भारती की कल्पना, स्थापना और विकास में समर्पित भाव से जुड़ा हुआ है। इस परिवार के वंशज श्री सूरजमल गोठी को आचार्य तुलसी ने जैन विश्व भारती की स्थापना के लिए उसका संयोजक नियुक्त किया। उसी समय जैन विश्व भारती के संविधान निर्माण की अपेक्षा को ध्यान में रखते हुए श्री जयचंदलाल जी गोठी प्रथम संस्थापक सदस्य बने एवं सूरजमल जी गोठी भी संस्थापक सदस्य बने। उस समय बने संस्थापक सदस्यों में से वर्तमान में केवल सूरजमल जी गोठी ही मौजूद हैं। प्रस्तुत है कामधेनु के पाठकों के लिए संस्थापक सदस्य के रूप में श्री सूरजमल जी गोठी के उद्‌गार। सं.

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी का एक स्वप्न था, स्वप्न नहीं, अपितु संकल्प था कि समाज को एक ऐसी कामधेनु देनी है जिसका दोहन करके तेरापंथ समाज व मानव जाति निरंतर प्रगति करती रहे। गुरुदेव एक ऐसी संस्था का निर्माण करना चाहते थे जो संघ की बहुआयामी गतिविधियों का केन्द्र हो। आपकी कल्पना के अनुसार संघ की सभी केन्द्रीय संस्थाओं के मुख्य कार्यालय यहाँ हों, उनकी गतिविधियों का संचालन इसी केन्द्र से हो एवं शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना तथा सेवा आदि के कार्यक्रम यहाँ से सुव्यवस्थित रूप से चले, जिससे धर्मसंघ का सर्वांगीण विकास हो सके।

मेरा परम सौभाग्य था कि प्रारंभ से ही गुरुदेव ने मुझे इसके साथ जोड़ने की महती कृपा कराई। गुरुदेव की परिकल्पना थी कि बैंगलोर चातुर्मास, हैदराबाद माघ महोत्सव तथा रायपुर के चातुर्मास के संपन्न होने के बाद फिर राजस्थान लौटना है। उसके पहले जैन विश्व भारती संस्था की परिकल्पना को साकार रूप मिल जाना चाहिए ताकि वापस लौटने के पश्चात इस संस्था की गति-प्रगति पर विशेष ध्यान दिया जा सके। ऊटी के साप्ताहिक प्रवास काल में लगातार दो-तीर्न दनस ामाजके ि वशिष्टश्र ावकोंए वंस ंस्थाओंके प ादाधिकारियोंके स ाथइ सवि षयप रस घिर्न चतनच लाप र अन्त में महासभा के कार्यकर्ताओं ने उस समय इस कार्य को हाथ में लेने में अपनी असमर्थता व्यक्त की। फिर भी गुरुवर के मानस में निरंतर इस विषय पर चिंतन चलता रहा। बैंगलोर चातुर्मास के दौरान दिनांक 18.10.1969 को आचार्यवर ने मुझे जैन विश्व भारती के संयोजक के रूप में मंगल पाठ सुनाते हुए मुझे फरमाया कि आज जैन विश्व भारती का स्थापना दिवस है। मैंने भी इसे गुरु का प्रसाद एवं आशीर्वाद मानकर इस कार्य को गुरु दृष्टि के अनुरूप साकार रूप देने का दृढ़ संकल्प किया। उस दिन के बाद रात और दिन इसी विषय पर सोचता रहता था। समाज में मेरी अपनी कोई टीम नहीं थी और न ही मैं किसी टीम का हिस्सा था। क्या होगा, कब होगा, कैसे होगा इसका कोई अंदाजा नहीं था। बैंगलोर से बंबई, कलकत्ता, दिल्ली, जयपुर, लाडनूं एवं सरदारशहर के बीच चक्कर लगाता रहा एवं समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों से मिलता रहा पर कार्य को साकार रूप देने की स्थिति नहीं बन सकी। हिम्मत करके कुछ मुद्दे मैंने अपने आप तय किए :

क) सरदारशहर में मैंने जैन विश्व भारती विधान का प्रारूप बनाया और कलकत्ता जाकर श्री मोहनलाल जी बांठिया आदि कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर उसका अंतिम रूप तैयार किया एवं गुरुदेव की स्वीकृति प्राप्त की।

ख) आचार्यवर ने संस्थापक सदस्य तय करने का कार्य भी मुझे सौंप दिया। गुरु के साथ यदि माता-पिता का आशीर्वाद प्राप्त हो जाए तो कार्य शिखर चढ़ता है, इसी भावना के साथ मैंने अपने माता-पिता का आशीर्वाद प्राप्त किया और संस्था के प्रथम संस्थापक सदस्य के रूप में अपने पूज्य पिता जी श्री जयचंदलाल गोठी के हस्ताक्षर करवा कर कार्य का श्रीगणेश किया। तत्पश्चात समाज के वरिष्ठ व्यक्तियों के नामों का चयन किया एवं उनके हस्ताक्षर लिए।

ग) स्थान का चयन करना एवं उसे प्राप्त करना एक कठिन कार्य था। कई स्थानों के निरीक्षण के पश्चात श्री हनुमानमल जी बैंगानी ने आगे बढ़कर लाडनूं में स्टेशन के सिग्नल के पास अपनी जमीन देने की स्वीकृति प्रदान की एवं गुरुदेव ने वहाँ पधारकर मंगलपाठ फरमाया।

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च
2012

जैन विश्व भारती कामधेनु

इसप्र कारप्र ारंभिकक ार्योंक ीप रिसंपन्नताके ब ादस ंस्थाक ार जिस्ट्रेशनक रवाि लयाग याए वं8 0जीक ीध ाराके अंतर्गत छूट भी प्राप्त कर ली गई। जैन विश्व भारती के रजिस्ट्रेशन आदि के कार्य तो संपन्न हो गए पर अभी तक कार्यालय के लिए अथवा बैठने की कोई जगह नहीं थी। सर्वप्रथम मैं पुस्तकों की खरीद शुरू करना चाहता था। कलकत्ता में श्रीमान श्रीचंदजी रामपुरिया के सहयोग से पुस्तकों का चयन करके एवं आर्डर देकर उनको सरदारशहर के गोठी भवन के हॉल में काफी समय तक रखा। यह वर्धमान ग्रंथागार की शुरुआत थी। कुछ समय बाद कार्यालय के लिए लाडनूं की आधी पट्टी में एक स्थान की व्यवस्था हुई जहाँ इन पुस्तकों को लाकर रखा गया और श्री रामस्वरूप गर्ग को इस संस्था के प्रथम कर्मचारी के रूप में नियुक्त किया गया, जो अपने अंत समय तक संस्था को अपनी सेवाएँ देते रहे।

शुरू-शुरू में अर्थ की कोई व्यवस्था नहीं थी। प्रारंभ में खर्च की व्यवस्था मैं अपने ढंग से करता रहा। बाद में 2000 की रकम श्री हनुमानमल बैंगानी के ट्रस्ट से, 2000 रु. की रकम श्री मन्नालाल जी सुराणा के ट्रस्ट से तथा 1000 रु. की रकम किसी अन्य व्यक्ति के अनुदान से प्राप्त हुई और इस प्रकार कुल 5000 रु. की राशि मासिक रूप से प्राप्त होने लगी। इस प्रकार प्रारंभिक वर्षों में सीमित साधनों से संस्था का खर्चा चलता रहा। वक्त बीतता रहा और धीरे-धीरे समाज के सहयोग से संस्था की प्रगति का एक के बाद एक रास्ता निकलने लगा। यह संस्था का संघर्षमय काल था। पर आज संस्था का स्वरूप एवं विकास देखकर बहुत प्रसन्नता होती है। जैन विश्व भारती के विशाल प्रांगण में चारों ओर सुंदर भवनों का निर्माण, हरा-भरा, स्वच्छ एवं शांत वातावरण मन को मुग्ध करता है। शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में विश्वविद्यालय अपने आप में एक विशेष उपलब्धि है। वर्धमान ग्रंथागार में विभिन्न विषयों पर पुस्तकों का विशाल संग्रह आश्चर्यजनक है। संस्था द्वारा उच्च कोटि के साहित्य का प्रकाशन इसके सुयश को सर्वत्र प्रसारित कर रहा है। ध्यान-साधना के लिए यहाँ का वातावरण बहुत अनुकूल है। मैं कामना करता हूँ कि हमारे समाज के लोग इसका अधिक से अधिक उपयोग करें। आज प्रायः सभी अखिल भारतीय संस्थाओं के भवन यहाँ पर हैं, पर गुरुदेव के चिंतन के अनुरूप सभी गतिविधियों का संचालन यहाँ से नहीं हो पाता, यह चिंतनीय विषय है।

आज जब मैं जैन विश्व भारती संस्था को देखता हूँ तो मुझे खुद भी आश्चर्य होता है कि इतनी बड़ी संस्था की स्थापना में मेरी भी कुछ सहभागिता थी। यह मेरे किसी पूर्व जन्म के पुण्योदय का ही सुफल है। मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे संस्था के संयोजक, प्रथम मंत्री एवं दो बार अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएँ देने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। मैं हार्दिक शुभेच्छा करता हूँ कि यह संस्था निरंतर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होती रहे और समाज एवं मानव जाति की अधिक से अधिक सेवा करती रहे। इसी मंगल भावना के साथ।

सूरजमल गोठी
संस्थापक सदस्य, जैन विश्व भारती

दृष्टांत

आचार्यश्र ीत ुलसीप ालीम ेंवि राजमानथ े।उ सस मयआ चार्यश्र ीम हाप्रज्ञ ओर य ुवाचार्यअ वस्थाम ेंथ े।क लकत्ताके नोपानी स्कूल के प्रमुख लोग आए, वार्तालाप हुआ।

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा – आपका नोपानी स्कूल बहुत अच्छा है। आप अच्छी पढ़ाई कराते हैं और फिर बच्चों को दुखी बनने के लिए घर भेज देते हैं।

आगंतुक लोगों ने आश्चर्य के साथ पूछा – कैसे?

युवाचार्यश्री ने कहा – आप बच्चों की समझशक्ति को तो बढ़ा देते हैं पर साथ में सहनशक्ति अगर नहीं बढ़ती है तो वे घर-परिवार में जाएँगे और अनेक बातों को देखेंगे, वे उन बातों को समझ तो लेंगे किंतु सहन नहीं कर सकेंगे और दुखी बन जाएँगे। इसलिए समझ के साथ सहनशक्ति भी बढ़नी चाहिए। परिवार में सहिष्णुता, एक-दूसरे के प्रति हितैषिता हो और अनुशासन हो तो परिवार का माहौल अच्छा बनता है।

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च
2012

जैन विश्व भारती में तिमाही के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ

जैन विश्व भारती के अंतर्गत जैन गणित पर शोध परियोजना का प्रारंभ

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का चिंतन था कि चारों अनुयोगों का समग्र रूप से अध्ययन कर गणितानुयोग पर अध्ययन एवं अनुसंधान का कार्य किया जाए। आचार्यश्री द्वारा यह चिंतन, वर्ष 2009 के लाडनूं चातुर्मास में व्यक्त किया गया था, जिसेम् ूर्तरू पद नेके ि लए् दनांक2 9-31अ क्तूबर,2 009क ोअ ाचार्यश्र ीम हाप्रज्ञअ ोरत त्कालीनय ुवाचार्यश्र ी महाश्रमण (वर्तमान आचार्य) के सान्निध्य तथा समणी चैतन्यप्रज्ञाजी के संयोजकत्व में जैन विश्व भारती, लाडनूं में स्थित जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग द्वारा "Jain Mathematics : Historical & Theoretical Aspects" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें विचार-विमर्श के उपरांत गणित के क्षेत्र में जैन दर्शन एवं जैन परंपरा के योगदान को उजागर करने की दृष्टि से "Development of Mathematical Thoughts in Jain Literature" विषयक शोध परियोजना का कार्य प्रारंभ करने का निर्णय किया गया।

सन् 2011 में समणी डॉ. चैतन्यप्रज्ञाजी के निर्देशन एवं जैन गणित के क्षेत्र के वरिष्ठ विद्वान प्रो. अनुपम जैन के नेतृत्व में जैन विश्व भारती के अंतर्गत इस शोध परियोजना पर विधिवत कार्य प्रारंभ हुआ। इस परियोजना के अंतर्गत जैन गणित से संबंधित आगम ग्रंथों, साहित्य एवं पांडुलिपियों का संकलन किया जा चुका है। सन् 1908 से लेकर अब तक देश-विदेश की शोध पत्रिकाओं, अभिनंदन ग्रंथों, स्मृति ग्रंथों, स्मारिकाओं में प्रकाशित जैन गणित विषयक लेखों का भी संकलन किया जा चुका है। डॉ. आर. एस. शाह के माध्यम से गणितीय दृष्टि से महत्वपूर्ण '**अनुयोगद्वार सूत्र**' का अंग्रेजी अनुवाद का कार्य भी संपन्न हो चुका है। '**जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति**' का अंग्रेजी अनुवाद कार्य प्रगति पर है। विषय की जटिलता और इस क्षेत्र में कार्य करने वाले विद्वानों की कमी के कारण गणितानुयोग पर अध्ययन और अनुसंधान का कार्य बहुत कम हुआ है। इस दृष्टि से इस शोध परियोजना का महत्व बढ़ जाता है। इस शोध परियोजना के माध्यम से 'जैन परंपरा का भारतीय गणित को अवदान' को समग्र रूप से रेखांकित किया जाएगा, जिससे श्रमण संस्कृति का महत्व तो उजागर होगा ही साथ ही गणित इतिहास के क्षेत्र में भारतीय गणित के योगदान का महत्व भी बढ़ेगा।

उल्लेखनीय है कि उक्त शोध परियोजना जैन विश्व भारती के अंतर्गत निर्मित 'भंवरलाल बच्छावत जैन विद्या विकास निधि' नामक कोष से प्राप्त ब्याज की आय से संचालित हो रही है।

सरावगी फाउंडेशन द्वारा 'एम.जी. सरावगी स्मृति कोष' की स्थापना

जैन विश्व भारती के अंतर्गत महादेवलाल गंगादेवी सरावगी फाउंडेशन, कोलकाता के प्रायोजकत्व में प्रति वर्ष चार पुरस्कारों – आचार्य तुलसी अनेकांत सम्मान, आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान, जैन आगम मनीषा पुरस्कार एवं गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार का संचालन किया जाता है। इस फाउंडेशन के ट्रस्टी श्री गोविंदलालजी सरावगीन ेअ पनेद ूरदर्शी िचतनस े प ुरस्कारोंक ोअ ाजीवनप ्रायोजनाक ोस ुनिश्चितक रनेह ेतु म ार्च2 012म ें5 1 लाखरु पयेक ीर ाशिज ैनि वश्वभ ारतीक ोअ नुदानस ्वरूपप ्रदानक ीह ै,ि जससेज ैनि वश्वभ ारतीके अ ंतर्गत5 1 लाख की राशि के '**एम.जी. सरावगी स्मृति कोष**' की स्थापना की गई है। इस कोष से प्राप्त ब्याज की आय से प्रतिवर्ष फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित उक्त चारों पुरस्कारों का सुगमतापूर्वक संचालन हो सकेगा। उल्लेखनीय है कि सरावगी परिवार धर्मसंघ का संघनिष्ठ एवं प्रतिष्ठित परिवार है। इस परिवार के वरिष्ठ सदस्य श्री गोबिंदलालजी सरावगी धर्मसंघ के समर्पित और निष्ठावान श्रावक हैं। धर्मसंघ के चहुँमुखी विकास में इनकी उल्लेखनीय भूमिका रही है। अपने दूरगामी एवं उदार चिंतन के कारण ही इन्होंने उक्त स्मृति कोष की स्थापना की है। जैन विश्व भारती परिवार श्री गोबिन्दलालजी सरावगी के प्रति अत्यंत आदर एवं सम्मान प्रकट करता है और धर्मसंघ एवं समाज के विकास में उनके योगदान हेतु उनके प्रति हार्दिक आभार ज्ञापित करता है।

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च
2012

आगम मंथन प्रतियोगिता - 4 का परिणाम घोषित

जैन विश्व भारती द्वारा संचालित 'नंदी' आगम ग्रंथ पर आधारित आगम मंथन प्रतियोगिता - 4 के प्रथम चरण का परिणाम दिनांक 10 मार्च, 2012 को घोषित किया गया। इस प्रतियोगिता में 1297 प्रतियोगियों ने भाग लिया, जिनमें से लगभग 80 साधु-साध्वी थे। प्रतियोगिता के प्रथम चरण के घोषित परिणाम में 900 अंकों में से 890.5 से 895.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रथम 100 प्रतियोगियों के दूसरे चरण की परीक्षा अप्रैल के तृतीय सप्ताह में जैन विश्व भारती, लाडनूं में आयोजित है। द्वितीय चरण की परीक्षा के परिणाम के आधार पर इस आगम मंथन प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्तकर्ताओं की घोषणा की जाएगी।

विदेशियों ने लिया प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण

फरवरी-मार्च, 2012 में जैन विश्व भारती के तुलसी अध्यात्म नीडम् में जापान मूल की नागरिक आयाको एवं कोरिया मूल की नागरिक मांग सून ने प्रेक्षा-प्रशिक्षक श्री जीतमल गुलगुलिया एवं श्री मदनलाल फूलफगर के निर्देशन में प्रेक्षाध्यान एवं योग का प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रेक्षा-प्रशिक्षकों के निर्देशन में इन विदेशी नागरिकों को प्रेक्षाध्यान के विभिन्न चरणों – कायोत्सर्ग, प्राणायाम, ध्यान, योग एवं आसन का अभ्यास कराया गया। दोनों विदेशी नागरिकों ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों को सीखकर आनन्द की अनुभूति की एवं प्रेक्षाध्यान के अभ्यास को अपनी दिनचर्या में शामिल करने की इच्छा व्यक्त की।

होली स्नेह-मिलन कार्यक्रम का आयोजन

होली की पूर्व संध्या पर जैन विश्व भारती के कांफ्रेंस हॉल में होली स्नेह-मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ के निर्देशन एवं परिचालन प्रमुख श्री हेमन्त नाहटा की अध्यक्षता में आयोजित इस स्नेह मिलन समारोह में जैन विश्व भारती के सचिवालय, विभिन्न विभागों एवं पूरे परिसर में कार्यरत सभी कर्मीगण उपस्थित थे। इस स्नेह मिलन समारोह में डॉ. विजयश्री शर्मा, श्री दिनेश सोनी, श्रीमती सरिता सुराणा, श्री निमाई चरण त्रिपाठी, श्री पदमचंद नाहटा, श्री जगदीश प्रसाद कुर्मी, डॉ. हिमांशु मालपुरी, श्री राजेश सिंह भदौरिया, साधक श्री मदनलाल फूलफगर आदि ने अपनी प्रस्तुतियाँ देकर कार्यक्रम को रोचक बनाया। श्री हेमन्त नाहटा ने सभी को होली की शुभकामनाएँ एवं बधाई दीं। निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ ने जैन विश्व भारती के सभी कर्मियों को होली की शुभकामना देते हुए अपनी काव्यात्मक प्रस्तुति दी तथा उपस्थित सभी संभागियों को गुलाल से तिलक लगाकर त्यौहार की बधाई दी। कार्यक्रम का संयोजन श्री हनुमानमल शर्मा ने किया। उल्लेखनीय है कि जैन विश्व भारती में इस प्रकार के स्नेह मिलन समारोह का आयोजन पहली बार हुआ और सभी ने इस आयोजन की सराहना करते हुए भविष्य में भी इसे नियमित रूप से आयोजित करने की इच्छा प्रकट की।

आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार समर्पण समारोह

प्रो. जयनारायण शर्मा को प्रतीक चिह्न एवं पुरस्कार स्वरूप1,00,000 रु. की राशि भेंट करते हुए संयुक्त मंत्री श्री विजयसिंह चोरड़िया एवं प्रायोजक परिवार की ओर से श्री निर्मल सुराणा

जैन विश्व भारती द्वारा संचालित एवं सूरजमल सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, गुवाहाटी द्वारा प्रायोजित वर्ष 2010 का आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार 20 फरवरी, 2012 को रावलिया कलां में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित एक विशेष समारोह में पंजाब विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जयनारायण शर्मा को प्रदान किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री श्री विजयसिंह चोरड़िया ने स्वागत भाषण देते हुए प्रायोजक ट्रस्ट एवं प्रो. जयनारायण शर्मा का परिचय प्रस्तुत किया। प्रशस्ति पत्र का वाचन प्रोफेसर बच्छराज दूगड़ ने किया एवं प्रायोजक ट्रस्ट की ओर से श्रीमती शांति देवी सुराणा ने प्रो. शर्मा को प्रशस्ति पत्र भेंट किया। जैन विश्व भारती

के संयुक्त मंत्री श्री विजयसिंह चोरड़िया एवं प्रायोजक परिवार की ओर से श्री निर्मल सुराणा ने प्रो. जयनारायण शर्मा को प्रतीक चिह्न एवं पुरस्कार स्वरूप 1,00,000 रु. की राशि भेंट की। प्रो. जयनारायण शर्मा ने अपने पुरस्कार स्वीकृति भाषण में आचार्य महाप्रज्ञ को नमन करते हुए पुरस्कार प्रदाताओं के प्रति आभार ज्ञापित किया। आचार्य महाश्रमण ने इस अवसर पर अपना पावन पाथेय देते हुए कहा कि प्रो. जयनारायण शर्मा ने साहित्य के क्षेत्र में विशेष कार्य किया है और वे आगे भी और अधिक विकास कर अपना योगदान देते रहेंगे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. वन्दना कुण्डलिया ने किया।

जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

जीवन विज्ञान अकादमी एवं जैन विश्व भारती, लाडनूं के संयुक्त तत्वावधान में 14 फरवरी, 2012 को विश्वविद्यालय परिसर में जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री विक्रमसिंह सेठिया ने जीवन विज्ञान द्वारा व्यक्तित्व विकास एवं जीवन विज्ञान के संदर्भ में पॉवर पॉइंट के माध्यम से आकर्षक प्रस्तुति दी। श्री सेठिया ने अनेक उदाहरणों एवं उद्धरणों से आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जीवन विज्ञान को संदर्भित कर प्रशिक्षण दिया। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय के सभी छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रोफेसर जे.पी.एन. मिश्रा, सहायक कुलसचिव डॉ. अमित सिंह राठौड़, सुश्री वीणा जैन, डॉ. शांता जैन, जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़, जीवन विज्ञान अकादमी के श्री हनुमानमल शर्मा एवं श्री ओमप्रकाश सारस्वत आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन विश्वविद्यालय के जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग विभाग के सहायक प्राचार्य श्री युवराज खंगारोत ने किया। ज्ञातव्य है कि जीवन विज्ञान के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से ये कार्यशालाएँ श्री विक्रमसिंह सेठिया के द्वारा राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों यथा बिसाऊ, लाडनूं, सूरतगढ़, चूरू आदि में भी लगाई गई एवं वहाँ जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण दिया गया।

'आगम मनीषी' प्रो. मुनीश्री महेन्द्रकुमार जी का मंगल भावना समारोह एवं 'शासन गौरव' मुनिश्री धनंजय कुमार जी के स्वागत समारोह का आयोजन

आगम मनीषी प्रोफेसर मुनीश्री महेन्द्रकुमार जी के जैन विश्व भारती के वृद्ध साधु सेवाकेन्द्र में लगभग एक वर्ष के प्रवास की संपन्नता पर उनकी मंगल भावना हेतु एवं 'शासन गौरव' मुनिश्री धनंजयकुमार जी के आगामी एक वर्ष के प्रवास हेतु उनके स्वागत में आयोजित संयुक्त मंगल भावना एवं स्वागत समारोह के कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 3 फरवरी, 2012 को अहिंसा भवन में किया गया। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़, प्रोफेसर जे. आर. भट्टाचार्य, प्रोफेसर बच्छराज दूगड़, डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने मुनिद्वय के प्रति अपनी शुभकामनाओं एवं मंगल भावना की अभिव्यक्ति दी। साधक श्री मदनलाल फूलफगर ने सुमधुर गीतिका के द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति दी। मुनिश्री अजीतकुमार ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संयोजन मुनिश्री अभिजीत कुमार ने किया।

चेन्नई एवं बंगलुरु में जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय पर चिंतन गोष्ठी आयोजित

चेन्नई एवं बंगलुरु में आयोजित संगोष्ठी में मंचस्थ पदाधिकारीगण एवं उपस्थित श्रावक समाज

दक्षिण भारत के प्रमुख नगर चेन्नई एवं बंगलुरु के बृहद तेरापंथ श्रावक समाज को जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की गतिविधियों से अवगत करवाने एवं इनके भावी विकास तथा विस्तार पर विचार-विमर्श करने हेतु एक चिंतन गोष्ठी दिनांक 4 फरवरी, 2012 को चेन्नई में तथा 5 फरवरी, 2012 को बंगलुरु में जैन विश्व भारती के द्वारा आयोजित की गई।

इन चिंतन गोष्ठियों में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने पावर प्वायंट के द्वारा जैन विश्व भारती की विभिन्न उपलब्धियों, कार्यक्रमों तथा निर्माणाधीन योजनाओं से श्रावक समाज को अवगत कराया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री सुमेरमल सुराणा ने जैन विश्व भारती की वित्तीय स्थिति प्रस्तुत की। निर्माणाधीन योजना महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर के संबंध में मुख्य न्यासी श्री रणजीतसिंह कोठारी ने जानकारी प्रदान की। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के वित्त सलाहकार श्री प्रमोद बैद ने विश्वविद्यालय में संचालित पाठ्यक्रमों तथा भविष्य के लिए प्रस्तावित पाठ्यक्रमों की जानकारी दी। विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा ने श्रावक समाज से आह्वान किया कि विश्वविद्यालय के विकास तथा विस्तार के लिए जरूरी है कि तेरापंथ धर्मसंघ का श्रावक समाज विश्वविद्यालय से सक्रिय रूप से जुड़े और उसके विकास में सहायक बने।

चेन्नई में आयोजित संगोष्ठी में महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर के लिए श्री प्यारेलाल पितलिया ने 5 लाख रुपये, श्री प्रकाश मुथा ने 1 लाख रुपये तथा श्री मेघराज लुणावत ने 1 लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की। विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के विकास के लिए चेन्नई समाज द्वारा सामूहिक रूप से 51 लाख रुपये की घोषणा की गई। चेन्नई में इस चिंतन गोष्ठी के आयोजन में जैन विश्व भारती के ट्रस्टी श्री धर्मचंद लूंकड़, संचालिका समिति के सदस्य श्री प्रकाशचंद मुथा एवं श्री मेघराज लुणावत की सक्रिय भूमिका रही।

बंगलुरु में आयोजित संगोष्ठी में सक्रिय भूमिका निभाने वाले जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष श्री इंदरचंद दुधेड़िया, ट्रस्टी श्री नरपतसिंह चोरड़िया, श्री नवरत्नमल बच्छावत एवं संचालिका समिति के सदस्य श्री बहादुरसिंह सेठिया ने अपने

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च 2012

विचार रखे। इस अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने भी अपने उद्‌गार व्यक्त किए। बंगलुरु श्रावक समाज की ओर से विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के विकास हेतु 51 लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की गई। कार्यक्रम के अंत में जैन विश्व भारती के मंत्री श्री जितेन्द्र नाहटा ने आभार ज्ञापन किया।

चेन्नई एवं बंगलुरु में आयोजित इन संगोष्ठियों की आयोजना में स्थानीय संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों, ट्रस्टियों, संचालिका समिति के सदस्यों तथा स्थानीय श्रावक समाज की अच्छी सहभागिता रही।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का 22वां स्थापना दिवस समारोह

22वां स्थापना दिवस समारोह एवं उसके अंतर्गत आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियाँ

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का 22वां स्थापना दिवस समारोह 20 मार्च को सुधर्मा सभा में 'शासन गौरव' मुनिश्री धनंजयकुमार जी के सान्निध्य एवं विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा जी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति न्यायमूर्ति श्री एन.एन. माथुर ने अपने संबोधन में कहा कि जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय एक ऐसा संस्थान है जहाँ शांति,

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च 2012

नैतिकता और मानवीय मूल्यों के विकास के लिए कार्य किया जा रहा है। उन्होंने नैतिक शिक्षा के माध्यम से ही शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन को संभव बताते हुए जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान के माध्यम से शिक्षा के नए आयाम स्थापित करने पर बल दिया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि राजीव गांधी फाउंडेशन, नई दिल्ली के चेयरमैन प्रो. पी. सी. व्यास ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ज्ञान को मूल्यों के साथ जोड़ना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि अधिकांश शिक्षण संस्थान आज केवल 'टीचिंग शॉप' बनकर रह गए हैं। पश्चिम से आए कमोडिटी की नई अवधारणा को स्वीकार करने के बजाए हमें शिक्षा और मूल्यों के पवित्र मिशन को अपनाना चाहिए और इसके लिए यह विश्वविद्यालय देश भर के अन्य विश्वविद्यालयों का मार्गदर्शन कर सकता है। समारोह के विशिष्ट अतिथि तेरापंथ के वरिष्ठ श्रावक श्री मदनलाल तातेड़ ने आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय को 21 लाख रुपये का अनुदान देने की घोषणा करते हुए विश्वविद्यालय द्वारा दी जा रही शिक्षा को मानव जाति के लिए उपयोगी बताया।

कुलपति महोदया ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि मानवीय एवं चारित्रिक मूल्यों के विकास का यह विश्वविद्यालय आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों से उत्पन्न हुआ और वर्तमान में आचार्य महाश्रमण के आध्यात्मिक नेतृत्व में गतिशील है। शासन गौरव मुनिश्री धनंजयकुमार जी ने आचार पर बल देते हुए इस विश्वविद्यालय को आचार, विचार और संस्कार की दृष्टि से देश के समृद्ध विश्वविद्यालयों में से एक बताया।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रोफेसर जे.पी.एन. मिश्रा ने अनुशास्ता के संदेश का वाचन करते हुए विश्वविद्यालय का प्रगति विवरण प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं मातृ संस्था के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया के शुभकामना संदेश का वाचन जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ ने किया। समागत अतिथियों का स्वागत प्रोफेसर बच्छराज दुगड़, प्रोफेसर जे.आर. भट्टाचार्य, प्रोफेसर आर.बी.एस. वर्मा, डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, सुश्री वीणा जैन एवं डॉ. अनिल धर ने प्रतीक चिह्न एवं शॉल प्रदान करके किया। स्थापना दिवस के अवसर पर विगत शैक्षणिक सत्र के दौरान हुई विविध खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. संजीव गुप्ता ने किया।

स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह के द्वितीय चरण में डॉ. शांता जैन के निर्देशन में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में श्री युवराज सिंह खंगारोत के नेतृत्व में योग विभाग के विद्यार्थियों द्वारा आसन, प्राणायाम और योग के प्रदर्शन की आकर्षक प्रस्तुति दी गई। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों द्वारा भ्रष्टाचार पर लघु नाटिका, राजस्थानी लोकनृत्य, भांगड़ा नृत्य, कथक नृत्य आदि आकर्षक प्रस्तुतियाँ दी गई।

दैनिक भास्कर समूह द्वारा आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर के विद्यार्थियों की सहभागिता

सेंट्रल पार्क, जयपुर में दैनिक भास्कर समाचार पत्र समूह द्वारा 'मेरे सपनों का जयपुर' विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। लिमका बुक ऑफ रिकॉर्ड के अनुसार ऐसा पहली बार हुआ कि लगभग 20,000 छात्र-छात्राओं ने 13 किलोमीटर लम्बी ड्राइंग शीट पर एक साथ चित्र बनाए। इस चित्रकला के आयोजन में सिनेमा जगत के मशहूर अभिनेता तुषार कपूर भी उपस्थित थे। महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर के विद्यार्थियों ने भी इस उल्लेखनीय प्रतियोगिता में बहुत उत्साह और जोश से भाग लिया।

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च
2012

कामधेनु जैन विश्व भारती

जैन विद्या परीक्षाओं का परिणाम घोषित

जैन विश्व भारती की सतत प्रवाही प्रवृत्तियों में समण संस्कृति संकाय द्वारा 1977 से जैन विद्या की परीक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष (2011-12) की परीक्षाओं का परिणाम 24 मार्च, 2012 को सिरियारी में आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में कार्यक्रम निदेशक श्री मन्नालाल पुगलिया द्वारा घोषित किया गया। इस वर्ष जैन विद्या की परीक्षाओं के लिए 8466 आवेदन पत्र भरे गए, जिनमें 5652 परीक्षार्थी परीक्षा में बैठे तथा 4990 परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए। परीक्षा प्रमाणपत्र 88.29 प्रतिशत रहा। परीक्षाओं के व्यवस्थित नियोजन में आंचलिक संयोजकों एवं स्थानीय स्तर पर केन्द्र व्यवस्थापकों का विशेष योगदान रहा।

अखिल भारतीय स्तर पर वरीयता सूची में आने वाले विद्यार्थियों का कक्षावार विवरण :

प्रवेशिका प्रथम वर्ष

सुश्री प्रियंका भटेवड़ा, चैन्नई - 1
सुश्री जिज्ञासा जैन, जोजावर - 2
श्री रिषभ पोकरना, रायपुर - 2
सुश्री कीर्ति सुराना, राजगढ़ - 3

विशारद प्रथम वर्ष

सुश्री निकिता सेठिया, तिरुवण्णामलै - 1
सुश्री श्रेया बड़ौला, बारडोली - 2
श्री कुणाल जैन, कोलकाता - 3

रत्न प्रथम वर्ष

श्रीमती प्रेम पारख, हैदराबाद - 1
सुश्री शालू बैद, लूनकरनसर - 2
सुश्री हर्षा जैन, बीकानेर - 3

रत्न तृतीय वर्ष

सुश्री मोनिका गुगलिया, बैंगलुरु - 1
श्री संदीप डागा, दक्षिण हावड़ा - 2
श्रीमती सुमन कोठारी, काठमांडू- 3

प्रवेशिका द्वितीय वर्ष

श्री चिराग फूलफगर, छोटी खाटू - 1
सुश्री समीक्षा रुणवाल, जयसिंहपुर - 2
सुश्री मीनाक्षी बरड़िया, लूनकरनसर - 2
सुश्री दर्शना आच्छा, देवगढ़ मदारिया - 3

विशारद द्वितीय वर्ष

सुश्री दर्शना नौलखा, पुर - 1
सुश्री दीपिका कांकरिया, बालोतरा - 2
सुश्री दिव्या मांडोत, विजयनगर - 3

रत्न द्वितीय वर्ष

श्रीमती रेखा पितलिया, मैसूर - 1
सुश्री सपना बुच्चा, जोरावरपुरा - 2
सुश्री ममता सुराना, लुधियाना - 3

विज्ञ प्रथम वर्ष

श्रीमती रंजू बैद, हिंदमोटर, हावड़ा - 1
श्रीमती अंजु बोथरा, जयपुर एम - 2
श्रीमती अंजू चौधरी, घाटकोपर - 3

विज्ञ द्वितीय वर्ष

श्रीमती रूपा गादिया, बैंगलुरु - 1
श्रीमती मयूरी सुराना, औरंगाबाद - 2
सुश्री प्रीति कुंडलिया, हिंदमोटर, हावड़ा - 3

पूरे भारत एवं नेपाल में वरीयता स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को
जैन विश्व भारती की ओर से हार्दिक बधाई।

विदेश स्थित केन्द्रों की गति-प्रगति

ह्यूस्टन सेंटर

जैन विश्व भारती के ह्यूस्टन सेंटर में इस त्रैमासिक अवधि में समणी परिमलप्रज्ञा एवं समणी अमितप्रज्ञा के सान्निध्य में धर्मप्रभावना के विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। यहाँ नियमित रूप से ध्यान, स्वाध्याय एवं जप के कार्यक्रम गतिशील है। इसी क्रम में त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें ह्यूस्टन के साथ ऑस्टिन, डलास आदि आस-पास के क्षेत्रों के शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर के दौरान संभागियों को ध्यान, आसन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग एवं श्वास प्रेक्षा का नियमित अभ्यास कराया गया। समणीवृंद ने वास्तविक सौंदर्य किस चीज में है, अपने आपको बदलने के नुस्खे, अपने मन को समझो, प्रेक्षाध्यान : क्या, क्यों और कैसे?, खुद को बदलो (Where does the real beauty lies, Tips to Transform Your Self, Understand Your Mind, Preksha Meditation : Whar, Why & How?, Transform Your Self) आदि विषयों पर सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया। 'एक शाम परिवर्तन के नाम' सांस्कृतिक कार्यक्रम में संभागियों ने शिविर कार्यक्रम में रोचक प्रस्तुति दी। शिविरार्थियों ने अनुभव किया कि संयमित जीवन शैली ध्यान, प्राणायाम आदि अभ्यास स्वस्थ एवं प्रसन्न जीवन जीने के लिए अनिवार्य है। इस त्रिदिवसीय शिविर की आयोजना में श्री बैंगानी, श्री निखिल जैन, सुश्री प्रतिमा बेन, श्री अमर जैन, सुश्री जसमीन जैन आदि का सहयोग रहा।

डाइबिटीज प्रबंधन पर कार्यशाला

इंडिया कल्चर सेंटर एवं सावा इंटरनेशनल के सहयोग से जैन विश्व भारती के ह्यूस्टन सेंटर में 'डाइबिटीज प्रबंधन' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता ग्लेंडोट् जोन्ड्स ने विषय पर गहन जानकारी दी। समणी परिमलप्रज्ञा ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि आज की तेज एवं भागदौड़ वाली जिंदगी में ब्लड प्रेशर, मोटापा, हृदय रोग जैसी बीमारियों की संख्या प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, जिसके मुख्य कारण हैं बदलती हुई जीवन शैली, अनिद्रा और अवसाद आदि। समणी जी ने उक्त रोगों के निदान के संबंध में प्रेक्षाध्यान की चर्चा करते हुए कहा कि व्यक्ति ध्यान, कायोत्सर्ग, मंत्र साधना एवं श्वास की क्रियाओं के नियमित अभ्यास से इन बीमारियों से मुक्ति पा सकता है।

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च
2012

जैन विश्व भारती कामधेनु

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च
2012

न्यूजर्सी सेंटर

समणी सन्मतिप्रज्ञा के नेतृत्व में न्यूजर्सी सेंटर में इस त्रैमासिक अवधि में अनेक धर्मप्रभावक कार्यक्रम आयोजित किए गए। फरवरी माह में समणीवृंद का स्वागत समारोह आयोजित किया गया, जिसमें समणीवृंद के आगामी प्रवास को उत्साह एवं उल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान समणी सन्मतिप्रज्ञा एवं समणी जयन्तप्रज्ञा ने शिवानन्द आश्रम का भ्रमण किया, जो ध्यान एवं साधना की दृष्टि से महत्वपूर्ण केन्द्र है। इसके अतिरिक्त न्यूजर्सी में ध्यान, स्वाध्याय और ज्ञानशाला का साप्ताहिक क्रम भी जारी है।

ओरलेंडो सेंटर

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

शांति की खोज में (In Search of Peace) विषय को केन्द्र में रखकर सोलहवां वार्षिक प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित हुआ, जिसमें ओरलेंडो, मियामी, वीरो बीच, टाम्पा, ज्यूपिटर आदि आसपास के स्थानों के लगभग 100 लोगों ने भाग लिया। ओरलेंडो और मियामी में प्रवासरत समणी भावितप्रज्ञा, समणी संघप्रज्ञा, समणी चैतन्यप्रज्ञा एवं समणी उन्नतप्रज्ञा के सान्निध्य में यह शिविर आयोजित हुआ। यह शिविर युवा, किशोर एवं बच्चों के तीन अलग-अलग वर्गों में आयोजित किया गया। प्रत्येक वर्ग में समणीवृंद ने महत्वपूर्ण विषयों पर पावर प्वॉयंट के माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान किया। शिविर के संभागियों को आसन, प्राणायाम, योग आदि का अभ्यास करवाया गया। इस शिविर में करवाए गए प्रयोगों को सभी शिविरार्थियों ने उत्साह एवं आनन्द से किया तथा शांति की अनुभूति की।

इस अवधि में समणी भावितप्रज्ञा एवं समणी संघप्रज्ञा ने ओरलेंडो के आसपास के क्षेत्रों में अनेक धर्मप्रभावक व्याख्यान एवं कार्यक्रम आयोजित किए, जिनमें मुख्य रूप से ज्यूपिटर एवं वीरो बीच में 'आध्यात्मिकता के लिए सही दृष्टिकोण आवश्यक है' (Right vision is needed for Spirituality) विषय पर व्याख्यान दिया गया। कैथोलिक चर्च एवं रोलिन्स कॉलेज में भी समणीवृंद के आकर्षक एवं प्रेरणादायी कार्यक्रम आयोजित हुए।

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च
2012

जीवन शैली और स्वास्थ्य

जीवन का प्रत्यक्ष संबंध शरीर से तथा परोक्ष संबंध मन के अनेक उपादानों एवं निमित्तों से है। भगवान महावीर ने जिन तत्वों का प्रतिपादन किया, उनमें प्रधान तत्व है – संयम। महावीर के इस दृष्टिकोण के अनुसार जीवन शैली संयम प्रधान होनी चाहिए। समता, संतुलन आदि अनेक तत्व हैं। इन सबका संबंध है संयम से। सभी व्यक्ति समता, संतुलन आदि चाहते हैं किंतु जब तक संयम की साधना नहीं होती, सामान्यतः संयम का अर्थ बहुत सीमित समझा जाता है। हमें उसे व्यापक अर्थ में समझना होगा। यही समझा जाता है कि किसी विशेष प्रकार का व्रत लेना संयम है। पतंजलि के अनुसार संयम का अर्थ है – धारणा, ध्यान और समाधि – तीनों का एकत्र योग। कोरी धारणा, कोरा ध्यान अथवा कोरी समाधि संयम नहीं है। तीनों का एकत्र योग संयम है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महावीर द्वारा प्रतिपादित संयम का अर्थ है – मस्तिष्कीय नियंत्रण। जब तक मस्तिष्क के अनेक प्रकोष्ठों, उनके संबंधों या विभागों पर विचार न करें तो समता, उपशम ब्रेन, इन सबका संबंध इमोशन से है। उपशम, कषाय-विजय आदि तभी संभव है जब इमोशनल ब्रेन पर नियंत्रण होता है।

संयम का अर्थ

मस्तिष्क का एक भाग है – लिम्बिक सिस्टम। यहाँ भावनाएँ उपजती हैं। सुख-दुःख, प्रसन्नता आदि की अनुभूति होती है। जब तक लिम्बिक सिस्टम पर नियंत्रण नहीं होता तब तक भावनाओं पर नियंत्रण नहीं किया जा सकता। मस्तिष्क भाव-नियंत्रण का नियामक साधन है।

मस्तिष्क पर नियंत्रण के अभाव में न आहार संयम हो सकता है और न अन्य संयम ही हो सकता है। लोग जानते हैं कि तम्बाकू का सेवन करना, जर्दा खाना, मद्यपान करना आदि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है पर वे छोड़ नहीं पाते। इसका स्पष्ट हेतु है कि उनका अपने मस्तिष्क पर नियंत्रण नहीं है। यदि मस्तिष्क पर नियंत्रण हो जाए तो वह एक क्षण में छूट जाता है।

रोग उत्पत्ति के हेतु

भगवान महावीर ने रोग की उत्पत्ति के नौ कारण बताए हैं –

1. अच्चासणयाए, 2. अहितासणयाए, 3. अतिणिद्दाए, 4. अतिजागरितेणं, 5. उच्चारणिरोहेणं, 6. पासवणणिरोहेणं, 7. अद्धाणगमणेणं, 8. भोयणपडिकूलताए, 9. इंदियत्थविकोवणयाए।

अर्थात अत्यधिक भोजन, अहितकर भोजन, अतिनिद्रा, अतिजागरण, मल बाधा को रोकना, मूत्र को रोकना, पंथगमन, प्रतिकूल भोजन तथा इंद्रियार्थ-विकोपन।

भोजन

पहला कारण है – अहितकर भोजन करना। भोजन में खान-पान की सभी वस्तुएँ आ जाती हैं। तम्बाकू, जर्दा, शराब आदि वस्तुओं का बार-बार खाना भी रोग का हेतु है। अधिक वस्तुओं का उपयोग करना भी रोग का कारण है। मनुष्य यह जानता है, पर वह आहार का संयम नहीं कर पाता। आहार का संयम इसलिए नहीं हो पाता कि मस्तिष्क पर नियंत्रण नहीं है। यदि मस्तिष्क पर नियंत्रण होता है तो तत्काल आहार का संयम हो सकता है।

श्रम स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक तत्व है। श्रम के बिना रक्त का संचार नहीं होता और व्यक्ति स्वस्थ नहीं रह पाता। महावीर ने रोग का एक कारण बताया है अत्यशन अर्थात अत्यधिक खाना। अत्यधिक बैठे रहना भी रोग का एक कारण है। कुछ लोग सात-आठ घंटा लगातार बैठे रहते हैं। वे श्रम से जी चुराते हैं और रोग से आक्रांत हो जाते हैं।

अनिद्रा

अनिद्रा या अतिनिद्रा भी रोग का कारण बनती है। नींद स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, अनिवार्य है। इसलिए अनिद्रा से बचना चाहिए, संयमित निद्रा लेनी चाहिए। आयुर्वेद में भी अतिनिद्रा से होने वाली हानियों का उल्लेख है। उसमें दिन में सोने का निषेध है। आयुर्वेद के अनुसार नींद और कफ का संबंध है। नींद में श्वास की संख्या बढ़ जाती है। ज्यादा नींद

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च
2012

कामधेनु जैन विश्व भारती

लेने वाला आदमी जीवनी शक्ति को कम करता है। अति जागरण भी रोग का कारण है।

वाणी का असंयम

वाणी का असंयम भी रोग पैदा करता है। इसमें भी जीवनी शक्ति अधिक खर्च होती है। जैविक शक्ति के क्षरण के तीन मुख्य साधन हैं - आँख, वाणी और जननेन्द्रिय। अंगुलियों से भी विद्युत निकलती हैं। जिन लोगों ने आभामंडल को देखा है या आभामंडल को जो देखना जानते हैं उन्हें ज्ञात है कि अंगुलियों से विद्युत का प्रवाह निकलता है।

अब्रह्मचर्य

अब्रह्मचर्यभ ीर ोगक ाप्र ामुखस ाधनहै ाज ीवनके ात ीनआ ालंबनहैं - -ब्र ाह्मचर्य,आ ाहारअ ौरनि द्रा ाक ामक ीअ ति, आहार की अधिकता और नींद की अधिकता – तीनों रोग के कारण बनते हैं। इन सब पर नियंत्रण करना संयम है। संयम अर्थात मस्तिष्क पर नियंत्रण। जिसने मस्तिष्क पर नियंत्रण करना सीखा है, वह बहुत स्वस्थ रह सकता है।

क्रोध के संवेग के प्रबल होने पर आदमी बीमार हो जाता है। इसका कारण है – मस्तिष्क में तनाव। मस्तिष्क में तनाव आते ही स्नायु-संस्थान दुर्बल हो जाता है, जिसका स्नायु-संस्थान दुर्बल होता है उस पर रोग का आक्रमण होता रहता है आयुर्वेद मानता है कि क्रोध से पित्त का प्रकोप बढ़ता है। उससे एसीडीटी बढ़ती है, अल्सर हो जाता है।

स्वास्थ्य और मस्तिष्क

स्वास्थ्य और मस्तिष्क दोनों में गहरा संबंध है। जो व्यक्ति मस्तिष्क पर नियंत्रण करना नहीं जानता, नियंत्रण की विधियों को नहीं जानता, वह शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक दृष्टि से भी स्वस्थ नहीं रह सकता। आगंतुक बीमारियों पर उसका नियंत्रण न भी हो, परंतु बड़ी-बड़ी जो बीमारियाँ हैं, उनका संबंध संयम और असंयम से बहुत है। शरीरशास्त्र में मस्तिष्क का गहरा अध्ययन हुआ है। उसमें अल्फा और थेटा – इन तरंगों का अध्ययन हुआ है। अल्फा से मस्तिष्क का तनाव कम होता है। इसका तात्पर्य है कि ग्रंथियों का स्राव संतुलित होता है। जब हमारी अंतःस्रावी ग्रंथियों का स्राव संतुलित होने लगता है तब मनुष्य स्वस्थ रहता है।

आरोग्य है समता

हमअ ध्यात्मके इ नत त्वोंप रवि चारक रेंअ ौरज ीवनश ैलीम ेंइ नकास मावेशक रेंत ोस मताअ ध्यात्मक ात त्वहै। समता का अर्थ है - समभाव। कहीं झुकाव नहीं, कहीं विषमता नहीं। न चिंतन का वैषम्य, न कार्य का वैषम्य। आयुर्वेद का सूत्र है – दोषवैषम्यं रोगः दोष साम्यं आरोग्यम्। दोषों की विषमता रोग है और दोषों का साम्य आरोग्य है। जब वात, पित्त और कफ विषम हो जाते हैं तब रोग उत्पन्न होता है और जब ये तीनों दोष सम अवस्थाओं में रहते हैं तब स्वास्थ्य होता है। मानसिक समता आरोग्य है। अतः समता और स्वास्थ्य पर्यायवाची मान सकते हैं। जहाँ समता है वहाँ स्वास्थ्य है और जहाँ स्वास्थ्य है वहाँ समता है। जहाँ विषमता है वहाँ रोग है और रोग है वहाँ विषमता है। अहंकार, कपट, लोभ – ये सब रोग के उत्पादक हैं। माधव निदान ग्रंथ में हृदय को दुर्बल बनाने वाले कारणों में एक कारण लोभ को माना है। जिसमें लोभ की प्रवृत्ति अधिक होगी, उसका हृदय दुर्बल होगा। सभी संवेग स्वास्थ्य को अस्त-व्यस्त कर देते हैं।

हमारी जीवन शैली उपशम प्रधान, समता प्रधान तथा संतुलन प्रधान होनी चाहिए। इस प्रकार की जीवन शैली से शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रोगों से बचा जा सकता है। जीवन शैली का मुख्य तत्व है – संयम। यह तत्व सभी तत्वों के साथ अनुस्यूत है। जिस जीवन शैली में यह तत्व होता है वह जीवन सुखी और आनन्दमय होता है।

जरूरी है प्रशिक्षण

प्रेक्षाध्यान पद्धति में अनुप्रेक्षा तथा कुछ अंशों में सम्मोहन का प्रयोग कराया जाता है। यह इसलिए कि मस्तिष्कीय नियंत्रण तथा भावनात्मक नियंत्रण सध सके। अनुप्रेक्षा में एक निश्चित शब्दावली को बार-बार दोहराया जाता है। अर्थात इस प्रक्रिया से हम मस्तिष्क को सुझाव देते हैं। यह मस्तिष्क को प्रभावित करता है। मस्तिष्क को प्रभावित करने वाला मुख्य तथ्य है – भावना। भावना का अर्थ है – बार-बार अभ्यास। जब मस्तिष्क में एक ही भावना बार-बार उभरती है तो वह मस्तिष्क प्रशिक्षित हो जाता है। उसके प्रशिक्षण के बिना संयम की बात सधती नहीं। मस्तिष्क सुझाव को स्वीकार करता है और इसी स्वीकृति का कर्मशास्त्रीय कारण है लेश्या। यह प्रवाह भीतर विद्यमान है। यही

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च
2012

जैन विश्व भारती कामधेनु

हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है। शरीरशास्त्र बना रहता है और जब यह स्राव असंतुलित हो जाता है तब अस्वास्थ्य उभर आता है। इसी प्रकार हमारा भीतरी प्रवाह लेश्या भी हमारे स्वास्थ्य तथा अस्वास्थ्य के लिए जिम्मेदार है। हम पवित्र लेश्या या भावना का प्रयोग करें, मस्तिष्क उससे प्रभावित होगा।

कार्यकारी होते हैं स्नायुगत संस्कार

आगमों में एक महत्वपूर्ण शब्द है भावियप्पा-भावियप्पा। भावितात्मा वह होता है, जिसने अपने मन को भावित, वासित कर लिया है। मस्तिष्क और स्नायु-संस्थान को निरपेक्ष होकर अपने अनुसार बना लिया है। स्नायुगत संस्कार बहुत कार्यकारी होते हैं। कुछ क्रियाएँ शारीरिक और स्नायविक अभ्यास के कारण भी चलती हैं। जिस घर में रहते हैं और प्रतिदिन जिन सीढ़ियों पर आरोहण-अवरोहण करते हैं, वहाँ प्रतिदिन जागरूक रहने की आवश्यकता नहीं होती। सीढ़ियों पर पैर अपने आप उठेंगे और आगे बढ़ते जाएंगे। सीढ़ियों की ऊँचाई की ओर प्रतिपल ध्यान रखने की आवश्यकता नहीं रहेगी। यह पड़े तो वहाँ अत्यंत जागरूक रहना होता है। सीढ़ियों की ऊँचाई को ध्यान में रखकर पैर रखना होता है। हम स्नायु-संस्थान को जो अभ्यास देते हैं वह वैसा ही करता रहता है। कुछ व्यक्तियों को विचित्र रूप में स्नायविक अभ्यास हो जाता है। कुछ की अंगुलियाँ हिलती रहती हैं। कागज पेंसिल न होने पर भी लिखने की मुद्रा बनी रहती है। एक व्यक्ति को ऐसा स्नायविक अभ्यास था कि वह कहीं भी बैठा रहता तो निरंतर लकीरें खींचता रहता। एक बारव हअ पनेमि त्रोंके स ाथन ौका-विहारम ेंग याव हाँभ ीव हह ाथब ाहरनि कालकरअ ंगुलीस ेप ानीप रल कीरें खींचने लगा। लोगों ने उसके स्नायविक अभ्यास के लिए आश्चर्य व्यक्त किया।

मस्तिष्कीय नियंत्रण का सूत्र

स्नायु-संस्थान को किस प्रकार का अभ्यास देना है, यह व्यक्ति पर निर्भर करता है। अच्छा या बुरा जैसा भी अभ्यास दिया जाएगा, स्नायु संस्थान वैसा करता रहेगा। साधना का प्रयोजन यही है कि जो दिया हुआ अभ्यास हितकर नहीं है, उसे बदलकर दूसरा हितकारी अभ्यास किया जाए। जो अभ्यास स्वास्थ्य के लिए बाधक है, उससे मुक्त होकर स्वास्थ्यप्रद अभ्यास किया जाए। अनुप्रेक्षा और भावना के द्वारा ऐसा घटित किया जा सकता है। एक व्यक्ति पत्नी वियोग से अत्यंत दुखी था। वियोग में दुख का संवेदन करना उसका संस्कार था। उसे अनुप्रेक्षा का प्रयोग कराया गया। उसमें यह भावना पुष्ट हो गई कि जहाँ संयोग है, वहाँ वियोग अवश्यंभावी है। संयोग में सुखी और वियोग में दुखी होना एक संस्कार मात्र है। यथार्थ यह है कि संयोग और वियोग में पूर्ण समभाव रखा जाए।

तिमाही के दौरान प्रकाशित साहित्य

पुस्तक का नाम	रचनाकार	पुस्तक का नाम	रचनाकार
1. आचार्य भिक्षु तत्त्व साहित्य	गणाधिपति तुलसी / आचार्य महाप्रज्ञ	12. मेरी प्रिय कथाएँ	मुनि दुलहराज
2. एक विचार : एक पथ	आचार्य महाप्रज्ञ	13. प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान	मुनि किशनलाल
3. कथा कुबेर	आचार्य महाप्रज्ञ	14. संतों के बोल	मुनि विजयकुमार
4. प्रेक्षाध्यान : दर्शन और प्रयोग	आचार्य महाप्रज्ञ	15. मधु कलश	मुनि विजयकुमार
5. सोया मन जग जाए	आचार्य महाप्रज्ञ	16. भावों का संसार	मुनि विजयकुमार
6. रोज की एक सलाह	आचार्य महाश्रमण	17. संगीत सुधा	मुनि विजयकुमार
7. शिलान्यास धर्म का	आचार्य महाश्रमण	18. प्रयाण	मुनि भूपेन्द्रकुमार
8. सुखी बनो	आचार्य महाश्रमण	19. मुक्तक माला	मुनि भूपेन्द्रकुमार
9. रोज की एक सलाह	आचार्य महाश्रमण	20. मनहर साध्वी मनोहरां	साध्वी काव्यलता
10. आओ हम जीना सीखें	आचार्य महाश्रमण	21. आचार्य महाश्रमण : जीवन परिचय	साध्वी सुमतिप्रभा
11. जरूरत है ऐसे लोगों की	मुनि सुखलाल		

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च 2012

जैन विश्व भारती की साहित्य संपोषण योजना

जैन विश्व भारती द्वारा शिक्षा, सेवा, साधना, संस्कृति एवं समन्वय संबंधी सप्त सकार रूपी गतिविधियों में साहित्य प्रकाशन एवं वितरण एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। आगम, जैन विद्या, जीवन विज्ञान से संबंधित साहित्य के साथ-साथ धर्मसंघ के आचार्यों, चारित्रात्माओं, समण-समणीवृंद तथा शोधार्थियों द्वारा लिखित/संपादित साहित्य का प्रकाशन संस्था द्वारा विगत चार दशकों से किया जा रहा है। साहित्य प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अधिक से अधिक पाठकों को अत्यधिक कम मूल्य पर पुस्तकें उपलब्ध कराई जाती हैं। साहित्य प्रकाशन के लिए समाज के अनेक उदारमना महानुभावों का आर्थिक सहयोग जैन विश्व भारती को प्राप्त होता है। जैन विश्व भारती ऐसे सभी महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार ज्ञापित करती है। वर्तमान में जैन विश्व भारती के साहित्य प्रकाशन हेतु निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत अनुदान प्रदान किया जा सकता है :

साहित्य संपोषक

1. कोई भी व्यक्ति साहित्य प्रकाशन हेतु 5 लाख रु. का अनुदान देकर **साहित्य संपोषक** बन सकता है।
2. प्राप्त अनुदान राशि जैन विश्व भारती के अंतर्गत साहित्य प्रकाशन के लिए गठित विशेष कोष में जमा होगी।
3. साहित्य संपोषक को पूज्यप्रवर के सान्निध्य में आयोजित विशेष कार्यक्रम में राशि प्राप्त होने वाले वित्तीय वर्ष के साहित्य संपोषक के रूप में जैन विश्व भारती द्वारा मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।
4. जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'कामधेनु' एवं 'विज्ञप्ति' में साहित्य संपोषक का नामोल्लेख किया जाएगा।
5. जिस वित्तीय वर्ष में साहित्य संपोषक की अनुदान राशि प्राप्त होगी उस वित्तीय वर्ष से आगामी पांच वर्षों तक उसे प्रति वर्ष जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित संपूर्ण नवीन साहित्य की एक प्रति निःशुल्क प्रेषित की जाएगी।

साहित्य सहयोगी

1. कोई भी व्यक्ति साहित्य प्रकाशन हेतु 1 लाख रु. का अनुदान देकर '**साहित्य सहयोगी**' बन सकता है।
2. प्राप्त अनुदान राशि जैन विश्व भारती के अंतर्गत साहित्य प्रकाशन के लिए गठित विशेष कोष में जमा होगी।
3. साहित्य सहयोगी को पूज्यप्रवर के सान्निध्य में आयोजित विशेष कार्यक्रम में राशि प्राप्त होने वाले वित्तीय वर्ष के साहित्य सहयोगी के रूप में जैन विश्व भारती द्वारा मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।
4. जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'कामधेनु' साहित्य सहयोगी का नामोल्लेख किया जाएगा।
5. जिस वित्तीय वर्ष में साहित्य सहयोगी की अनुदान राशि प्राप्त होगी उस वित्तीय वर्ष से आगामी पांच वर्षों तक उसे प्रति वर्ष जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित संपूर्ण नवीन साहित्य की एक प्रति निःशुल्क प्रेषित की जाएगी।

जैन विश्व भारती को देय अनुदान पर भारत सरकार के आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी के अंतर्गत छूट उपलब्ध है। अधिक जानकारी हेतु जैन विश्व भारती सचिवालय के (01581) 222080, 224671 पर संपर्क किया जा सकता है।

बड़ा त्यागी कौन?

एक संत ने अपने भक्तों से कहा – आप धन्य हैं। आप लोग बड़ा त्याग का जीवन जी रहे हैं।

भक्तों ने कहा- -ड ाबाज ी !अ ापने ह्क याफ रमा दया ?ट यागक ा ज ीवन त ीअ ापकाहैं ।अ ापब ालब्र ह्मचारीहैं , अपरिग्रही हैं, महाव्रती हैं। त्यागी तो आप हैं। हम तो संसार का जीवन, भोग का जीवन जी रहे हैं।

संत ने कहा – भक्तो! मैंने तो परम सुखों को पाने के लिए परमात्मा का साक्षात्कार करने के लिए, आत्मा का साक्षात्कार करने के लिए इस सांसारिक तुच्छ भोगों को त्यागा है। तुमने तो इन सांसारिक तुच्छ भोगों के लिए परम सुखों का त्याग कर दिया है। अब बताओ बड़ा त्यागी कौन हुआ?

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च 2012

बी. एल. जोशी
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ-227 132

२५ मार्च,२०१२

प्रिय श्री चोरड़िया जी,

दिनांक २१-३-२०१२ के पत्र और उसके साथ संलग्न आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की नवीन कृति "Transform your self" की एक प्रति भी प्राप्त हुई। मेरा महाप्रज्ञजी से निरन्तर वर्षों तक सम्पर्क रहा एवं उनके मार्ग दर्शन से मैं लाभान्वित भी हुआ। पुस्तक में महाप्रज्ञजी ने ध्यान के द्वारा स्वभाव परिवर्तन के विषय में बहुत सकारात्मक मार्ग दर्शन किया है।

पुस्तक भेजने के लिये आपको धन्यवाद।

भवन्निष्ठ,

(बी०एल० जोशी)

नीरज के. पवन
आई.ए.एस.
कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट

कार्यालय 02932-252801
निवास 02932-252802
फैक्स 02932-252675
e-mail : dm-pal-rj@nic.in
पाली (राजस्थान) 306401

दिनांक 7 मई,2012

जैन विश्व भारती,
लाडनूं

आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा लिखित पुस्तक "रोज की एक सलाह" आचार्य श्री द्वारा मुझे दी गई। यह पुस्तक मुझे बहुत अच्छी लगी जिसको मैं रोज पढ़ता हूं और यह मेरे लिए बहुत ही प्रेरणादायी है। यदि आम आदमी इसे अपने जीवन मे उतारे तो अपने जीवन की दशा एवं दिशा बदल सकता है।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित,

भवदीय,

(नीरज के.पवन)
जिला कलेक्टर,पाली

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च 2012

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति प्रो. लालचंद सिंघी पीएच.डी. की उपाधि से सम्मानित

असम सरकार के पूर्व आयुक्त सचिव और अवकाशप्राप्त आईएएस अधिकारी प्रो. लालचंद सिंघी को गुवाहाटी विश्वविद्यालय द्वारा कानून में पीएच.डी. की उपाधि से सम्मानित किया है। प्रोफेसर सिंघी को यह उपाधि 'ए कंपरेटिव स्टडी ऑन द वर्किंग ऑफ द टिनेंसी रिफॉर्म लेजिसलेशंस इन असम एंड इट्स रिलेवेंस इन द कंटेक्स्ट ऑफ कॉर्पोरेट फार्मिंग एंड ग्लोबलाइजेशन' विषय पर गहन शोध के लिए प्रदान की गई है। कानून के क्षेत्र में इतने महत्वपूर्ण विषय को लेकर मौलिक शोध करने पर समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों ने बधाई दी है।

प्रो. सिंघी ने यह शोध गुवाहाटी विश्वविद्यालय के विधि संकाय के अध्यक्ष और डीन प्रो. शुभ्रम राजखोवा के निर्देशन में किया है। उल्लेखनीय है कि भारतीय प्रशासनिक सेवा के एक जाने-माने अधिकारी के रूप में परिचित रहे प्रो. सिंघी ने गुवाहाटी विश्वविद्यालय से एम.ए., एलएल.बी. और एलएल.एम. की परीक्षाएँ शीर्ष स्थान हासिल करते हुए उत्तीर्ण की थीं। वे यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास, ऑस्टिन एंड मोंटेरी कॉलेज ऑफ लॉ के प्रक्तन छात्र रह चुके हैं।
प्रो. सिंघी ने मोंटेरी इंस्टिट्यूट ऑफ इंटरनेशनल ट्रेड पॉलिसी पर विशेषज्ञता के साथ इंटरनेशनल पॉलिसी स्टडीज में मास्टर डिग्री भी हासिल की है। उन्हें मोंटेरी में एडम नोएल डार्लिंग मेमोरियल अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है।

श्रीडूंगरगढ़ निवासी गुवाहाटी प्रवासी श्री लालचंद सिंघी वर्तमान में तेरापंथ धर्मसंघ की सर्वोच्च नीति-नियामक संस्था 'तेरापंथ विकास परिषद' के संयोजक हैं। वे जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के गत चार वर्षों तक कुलाधिपति थे। जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों में आपका सक्रिय सहयोग एवं सहभागिता रहती है। आपके द्वारा समाज को प्रदत्त विशिष्ट सेवाओं के लिए जैन विश्वभारती द्वारा संचालित 'प्रज्ञा पुरस्कार' वर्ष 2010 का आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के पावन सान्निध्य में प्रदान किया गया था। आपकी सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने आपको 'शासनसेवी' के गरिमामय संबोधन से संबोधित किया था। आप 'शासन गौरव' मुनिश्री धनंजयकुमारजी के संसारपक्षीय अग्रज हैं।

जैन विश्व भारती आपको हार्दिक बधाई देते हुए आपके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करती है।

प्रवर्धित परिवार

जैन विश्व भारती के नए सदस्य

1. श्री बाबूलाल सुराणा, गुवाहाटी
2. श्री कीर्ति डूंगरवाल, दिल्ली
3. श्री दीपक बच्छावत, कोलकाता
4. श्री भंवरलाल दुगड़, कोलकाता
5. डॉ. वन्दना कुण्डलिया, सुजानगढ़
6. श्री बाबूलाल कच्छारा, मुंबई

जैन विश्व भारती में इस समयावधि में जुड़े नए सदस्यों का हार्दिक स्वागत!

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च 2012

जैन विश्व भारती परिसर में निर्मित भवन एवं कार्यालय

विविधता में एकता भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व है। हमारी संस्कृति की इस आधारभूत विशेषता का प्रतिबिंब जैन विश्व भारती में स्वतः दृष्टिगोचर होता है। अनेक व्यवस्थाओं, अनेक साधनों, अनेक प्रकल्पों, अनेक सुविधाओं, अनेक भवनों की एक संगम-स्थली है – जैन विश्व भारती।
जैन विश्व भारती में जिन विविधताओं का संगम है उनमें एक है यहाँ अवस्थित विभिन्न संस्थाओं के भवन एवं कार्यालय।ज ैनि वश्वभ ारतीक ेस ुरम्यताए वंर मणीयताज ्हाँए कअ ेरअ ध्यात्मिकप रिवेशस ेअ पूरितहै ,व हीं इसके विशाल परिसर में निर्मित विभिन्न केन्द्रीय संस्थाओं के भवन इसकी महत्ता को मुखर कर रहे हैं।

अभ्युदय

तेरापंथ धर्मसंघ की प्राचीनतम प्रतिनिधि संस्था 'जैन श्वेताम्बर तेरापंथीम हासभा'क ा श ाखाक ार्यालयइ सभ वनम ेंक्रियाशील है। भिक्षु विहार के निकट बने इस भवन का निर्माण सन् 1988 में सादुलपुर निवासी केसरीचंद जी दूगड़ के आर्थिक सौजन्य से किया गया था। तेरापंथ दर्शन और संस्कृति की पहचान कराने वाले इस भवन का उपयोग वर्तमान में 'तेरापंथ कक्ष' के रूप में किया जा रहा है, जिसमें साहित्य, आचार्यों के सम्मान में प्रदत्त सामग्री का नियोजन, महासभा द्वारा संचालित उपासक शिविर तथा आगम मंथन एवं इतिहास की प्रतियोगिताओं का संचालन किया जा रहा है।

युवालोक

तेरापंथ धर्मसंघ की युवा शक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाली केन्द्रीय संस्था अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद का यह केन्द्रीय कार्यालय है। सन् 1989 में निर्मित इस भवन के प्रथम तल का निर्माण सम्पतमल अशोक कुमार संचेती चेरीटेबल ट्रस्ट, मोमासर एवं द्वितीय तल का निर्माण मोहनलाल पुखराज सेठिया चेरीटेबल ट्रस्ट, मोमासर के सहयोग व सौजन्य से किया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की धार्मिक सांस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियों को निर्बाध रूप से सक्षम कार्यकर्ताओं के द्वारा संपादित किया जा रहा है। इसके द्वारा युवक वर्ग के संस्कारित कर समाज के संरचनात्मक मूल्यों के विकास और संवर्धन का प्रयास प्रशंसनीय है।

रोहिणी

अखिलभ ारतीयत ेरापंथम हिलाम ंडलक ेस ुव्यवस्थितरू पसे चलाने और दस्तावेजों को सुरक्षित रखने के लिए श्रीमती भंवरी देवी बैंगानी एवं अन्य अनुदानदाताओं के सहयोग से इस भवन का निर्माण किया गया और 1989 में आचार्य तुलसी के जन्म दिवस पर इस भवन का लोकार्पण हुआ। आचार्य तुलसी ने इसे 'रोहिणी' की संज्ञा दी और इस भवन के माध्यम से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की विविध गतिविधियों का संचालन अनवरत किया जा रहा है।

जय तुलसी फाउंडेशन

'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' के सूत्र के आधार पर समाज में व्यापक स्तर पर लोककल्याणकारी प्रवृत्तियों का संचालन जय तुलसी फाउंडेशन के द्वारा सन् 1996 से किया जा रहा है। इस फाउंडेशन की मुख्य प्रवृत्तियों - संपोषण, योजना, सघन चिकित्सा सहायता, उच्च शिक्षा सहयोग, आपातकालीन सहायता एवं अणुव्रत पुरस्कार है, जिनका संचालन कोलकाता, नई दिल्ली एवं लाडनूं कार्यालय द्वारा किया जाता है। जैन विश्व भारती में अवस्थित लाडनूं कार्यालय से इस फाउंडेशन की संपोषण योजना का संचालन होता है। इस कार्यालय की स्थापना भी 15 मई 1996 को हुई। इस कार्यालय के द्वारा जय तुलसी फाउंडेश असमर्थ एवं अभावग्रस्त परिवारों को संपोषण राशि प्रदान कर योगक्षेम का कार्य कर रहा है।

अमृतवाणी

पूज्यवरों की आर्षवाणी को आधुनिक उपकरणों के माध्यम से सुरक्षित और संरक्षित करने के उद्देश्य से वर्ष 1978 में इस भवन का निर्माण 'अमृतवाणी' के संरक्षक जेसराज जी सेखानी नेक रवायाथ ा,ि जसकाल ोकार्पणत त्कालीनउ पर ाष्ट्रपतिड ॉ. शंकरदयाल शर्मा ने वर्ष 1979 में किया। विगत 33 वर्षों से संघीय कार्यक्रमों, पूज्यप्रवरों के प्रवचनों, गीतों, भजनों एवं आध्यात्मिक आयोजनों आदि के ऑडियो एवं वीडियो कैसेटों के सृजन तथा वितरण का कार्य अमृतवाणी के द्वारा किया जा रहा है। इस भवन में रिकॉर्डिंग कक्ष, कैसेट संरक्षण प्रभाग तथा कार्यालय है, जिनके द्वारा अमृतवाणी की गतिविधियों का नियमित एवं निर्बाध संचालन होता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् का प्रतिमान : जैन विश्व भारती

कन्हैयालाल छाजेड़
विभागाध्यक्ष, हस्तलिखित एवं पांडुलिपि विभाग, जैन विश्व भारती

कन्हैयालाल छाजेड़

परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी उस वर्ष जैन विश्व भारती, लाडनूं के प्रांगण में प्रवास कर रहे थे। उत्तर दिशा में कुछ दूरी पर सेना का ग्रीष्मकालीन युद्धाभ्यास चल रहा था। युद्धाभ्यास अपने पूरे सबाब पर था। एक दिन सेना के कुछ उच्चाधिकारी हेलीकॉप्टर में बैठकर उस अभ्यास का निरीक्षण कर रहे थे। उड़ान कर रहा हेलीकॉप्टर अचानक जैन विश्व भारती के ऊपर से गुजरा। वे अधिकारी इस मरुभूमि में विश्व भारती की मनमोहक हरीतिमा देखकर आश्चर्य से भर गए। यह कौन सी जगह है? उनके मन में प्रश्न उठा। अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए वे जैन विश्व भारती में आए। परिसर का भ्रमण किया। उन्हें अद्भुत शांति का अनुभव हुआ। विश्व भारती के अधिकारियों को जब पता चला तो वे सेनाधिकारियों को गुरुदेवश्री की सन्निधि में ले गए। गुरुदेव का आकर्षक आभामंडल उन्हें रोमांचित कर गया। परमाराध्य आचार्यश्री ने उन्हें जैन साधु की चर्याओं की जानकारी दी और नीडम् में उन्हें ध्यान के प्रयोग करने की प्रेरणा दी। अपने निर्धारित कार्यक्रमों से समय निकालकर और कई अधिकारियों को साथ लेकर वे जैन विश्व भारती में आए और ध्यान के प्रयोग किए।

यह घटना बहुत वर्ष पहले की है। आज तो विश्व भारती परिसर में विभिन्न प्रकार के उद्यानों, भवनों एवं हरे-भरे विशाल वृक्षों के नए-नए आकर्षण जुड़ गए हैं। जो भी कोई नया व्यक्ति लाडनूं आता है उसके लिए पहली प्राथमिकता जैन विश्व भारती को देखने की रहती है। बिना किसी जाति-पांति एवं धर्म-संप्रदाय के भेदभाव के प्रातःकाल यहाँ प्रत्येक आयु वर्ग के लोग भ्रमणार्थ आते हैं। भिन्न-भिन्न मौसमों में यहाँ की सुषमा भी बदलती रहती है। अभी उषाकाल एवं रात्रि में जो व्यक्ति घूमने के लिए आते हैं उन्हें परिसर में लगे सैंकड़ों नीम के पेड़ों पर लगी मंजर एवं सरेश के पेड़ों के फूलों की सुवास स्वर्गाधिक आनन्द की अनुभूति कराती है। बरसात के मौसम में तो इस परिसर की छटा में अपरिमित निखार आ जाता है। मोरों की यह दर्शनीय शरणस्थली है। सैंकड़ों मोर-मोरनियाँ परिसर में निश्चिंतता से घूमते रहते हैं। मोर जब अपने पंख फैलाकर नाचते हैं तो वह रोमांचक दृश्य दर्शक अपनी आँखों और अपने कैमरे में कैद कर लेने के ऐसे स्थिर हो जाते हैं मानो उसके पैर धरती से चिपक गए हों।

ध्यान और योग के लिए जहाँ तुलसी अध्यात्म नीडम् में समुचित व्यवस्था है वहीं सेवाभावी कल्याण केन्द्र में आयुर्वेद चिकित्सा की अपनी छाप है। सैंकड़ों प्रकार की प्रामाणिक दवाइयाँ यहां की रसायनशाला में बनती हैं। चुंबकीय चिकित्सा से भी उपचार की यहाँ सुंदर व्यवस्था है। चारित्रात्माओं के निरंतर प्रवास से यहाँ आने वाले दर्शकों को अध्यात्म की अद्भुत खुराक एवं भाव चिकित्सा का योग भी मिल जाता है। एक ओर जहाँ सब प्रकार के ग्रंथों से समृद्ध यहाँ वर्द्धमान ग्रंथागार पाठकों एवं शोधार्थियों को आकर्षित करता है तो उसके पास में ही स्थित तुलसी कला प्रेक्षा (आर्ट गैलरी) में प्रवेश करने के बाद दर्शक उसमें प्रदर्शित विभिन्न कलाकृतियों को देखकर मंत्रमुग्ध-सा हो जाता है।

परिसर में ही स्थित जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में अध्ययनार्थ देश भर से आने वाले छात्र-छात्राओं एवं अध्यापकों एवं व्याख्याताओं की उपस्थिति वसुधैव कुटुम्बकम् की सहज अनुभूति करा देती है। विमल विद्या विहार (उच्चतर माध्यमिक विद्यालय) के छोटे-छोटे एवं किशोर छात्र-छात्राओं की चहल-पहल बरबस अपनी ओर लोगों का ध्यान खींच लेती हैं।

संक्षेपम ेंक हेंत ोए कह ैप ारिसरम ेंअ नेकप्र वृत्तियों,स ंस्थाओं,अ नेकानेकक ार्यक्रमोंअ ौरच ुंबकीयअ ाकर्षणोंक ा समवाय है - जैन विश्व भारती परिसर। तभी तो आचार्यश्री तुलसी ने कहा था -

शुद्ध हवा, शोधित दवा और दुआ बिन देर।
साजन! सावण भादवा विश्व भारती हेर।।

जैन विश्व भारती की स्थापना के पश्चात इसके उत्तरोत्तर विकास का मैं साक्षी रहा हूं। समय-समय पर मैंने इसके विभिन्नप दोंप ारर हतेह ुएअ नेकद ायित्वोंक ेस ंभालाहै ।ल गभगब ीस-पच्चीसव र्षोंस ेम ेराअ धिकांशप्र वासइ सी परिसर में हो रहा है।

सब कुछ सुंदर, अभिराम होते हुए भी परिसर में संचालित हो रही विभिन्न प्रवृत्तियों, कार्यक्रमों एवं आयामों को अगर समुचित सार-संभाल, अनुभव प्रवणता, आवश्यक प्रचार-प्रसार, कुशल निर्देशन एवं सक्षम नेतृत्व का योग नहीं मिला तो जो अनुपम उपलब्धियाँ जैन विश्व भारती को प्राप्त हो सकती हैं, उनसे संस्था वंचित रह जाएगी। अपेक्षा है सुंदर कलेवर में प्राण तत्व का निरंतर संचरण होता रहे। शुभ भविष्य की आशावादिता के साथ जैन विश्व भारती के कल्पनाकार एवं रचनाकार को नमन, शत शत नमन।

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च 2012

मेरी चित्त समाधि का केन्द्र : जैन विश्व भारती

सरोज सेठिया

सरदारशहर निवासी 'शासनसेवी' श्री पूनमचंद सोहनलाल सेठिया के संस्कारी परिवार में मेरा जन्म हुआ। जन्म से पहले ही पिता का साया सिर पर से उठ गया था। माँ ने विषम परिस्थितियों में अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपने तीनों बच्चों का पालन-पोषण किया।

बचपन से ही मैं शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ थी। अचानक मेरे साथ एक घटना घटी। आठ वर्ष की आयु में मैं चौथी मंजिल से नीचे गिर गई। पैर में काफी चोट लगी और आवाज में तोतलापन आ गया। 15 दिनों तक नियमित 'ॐ भिक्षु' का जाप तथा दीर्घ तपस्विनी साध्वीश्री पन्नाजी का स्मरण किया। जप का चमत्कार हुआ और मेरा तुतलाना बंद हो गया तथा पैरों में जो कसर थी वह भी ठीक हो गई।

कुछ समय पश्चात आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के दर्शनार्थ बंबई गई। मेरा जीवन लक्ष्य विहीन था। मुझे आगे क्या करना है, कैसे जीवन यापन करना है, कुछ निर्धारित नहीं था। बस एक ही बात मन में बैठी थी कि जैसा गुरुदेव कहेंगे वैसा ही करूँगी, वैसा ही बनूँगी। पूज्यप्रवर ने जैन विश्व भारती में आने का निर्देश दिया।

गुरु दृष्टि एवं गुरु कृपा का संकेत पाकर मैं 6 मई, 2003 को जैन विश्व भारती पहुँची। गुरुदेव तुलसी की ये पंक्तियाँ मेरे लिए प्रेरणास्रोत बनीं –

गुरु के अनमोल बोल संजीवन देते
तूफानों में भी जीवन नौका खेते
गुरु अत्राणों में त्राण, विश्व वत्सल हैं
मिलता जिससे पल-पल नूतन संबल
हर कठिन समस्या का हल गुरु की आस्था
दिग्भ्रांत द्वीप है शरण प्रतिष्ठा गति है
गुरुदृष्टि जगत में सबसे बड़ी प्रगति है।

आचार्य तुलसी के इन शब्दों ने मुझमें नित नई ऊर्जा का संचरण किया। जैन विश्व भारती में रहते हुए लगभग 9 वर्ष बीत गए। मेरे अध्ययन-अध्यापन और आवास की समस्त व्यवस्थाएँ सहजता से हो गई। जब मैं यहाँ आई तब मुझे स्वावलंबी बनाने का दायित्व पूज्यवरों ने सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला के प्रधान ट्रस्टी श्री झूमरमलजी बैंगानी को दिया। वर्तमान में मैं इसी आयुर्वेदिक रसायनशाला के वनौषधि भंडार में प्रभारी के रूप में कार्य कर रही हूँ।

जैन विश्व भारती कामधेनु, चिंतामणि रत्न, कल्पतरु है। यहाँ आने के बाद मैं परम चित्त समाधिस्थ हूँ। भविष्य में भी अनवरत सेवा का लाभ मिलता रहे, स्वयं भी निष्काम भाव से सदैव सेवा में तत्पर रहूँ, यही मेरे जीवन का लक्ष्य है।

अप्रतिम शांति का केंद्र : जैन विश्व भारती

मिस आयाको, जापान

मैं प्राकृत भाषा एवं जैनागमों का अध्ययन करने के लिए लगभग चार माह के प्रवास के लिए जैन विश्व भारती आई। इस स्थान के बारे में मुझे मेरे अध्यापक डॉ. होशीनागा (कियोतो विश्वविद्यालय, जापान) ने बताया था कि जैन दर्शन के अध्ययन के लिए जैन विश्व भारती सर्वश्रेष्ठ स्थान है। मैं यहाँ जैन मुनियों, जैन साध्वियों एवं जैन समणियों की जीवनचर्या एवं जीवनशैली पर शोध करने का प्रयास कर रही हूँ। मैंने यहाँ के साहित्य को भी पढ़ा है तथा ध्यान के प्रयोग भी किए हैं। मैं जापान को जैन धर्म एवं जैन संस्कृति से परिचित कराना चाहती हूँ, क्योंकि जैन धर्म और बौद्ध धर्म के सिद्धांतों में काफी समानता है। जैन विश्व भारती में आकर मुझे अप्रतिम शांति का अनुभव हुआ।

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च 2012

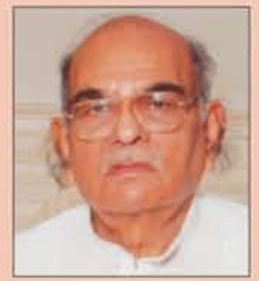

'भारती भूषण' श्री खेमचंद सेठिया

तेरापंथ धर्मसंघ की उर्वर भूमि गंगाशहर के प्रतिष्ठित सेठिया परिवार के उज्ज्वल नक्षत्र श्री खेमचंद जी सेठिया का व्यक्तित्व और कर्तृत्व श्लाघनीय है। धुन के धनी, श्रद्धाशील, निष्ठाशील और पुरुषार्थी श्री सेठिया जी तेरापंथ धर्मसंघ के वरिष्ठ श्रावकों में अग्रिम पंक्ति के श्रावक हैं।

1959 में आचार्य तुलसी के कलकत्ता चातुर्मास के दौरान वे धर्मसंघ से जुड़े और उसके बाद तेरापंथ धर्मसंघ से उनका जुड़ाव प्रगाढ़ से प्रगाढ़तर होता गया। राजस्थान से कलकत्ता की यात्रा में उन्होंने जिस श्रद्धा, श्रम और समर्पण से सहयोग दिया वह भविष्य में उनके अनुकरणीय कर्तृत्व की आधारशिला बना। इसके बाद आचार्य तुलसी की दक्षिण यात्रा तथा पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात आदि प्रांतों की दीर्घ यात्राओं को, उनकी कर्तव्यनिष्ठा और दूरदर्शिता ने सुगम और धर्मप्रचार के लिए उर्वर बनाया। सन 1970 में रायपुर चातुर्मास के उपद्रवी एवं तनावपूर्ण माहौल में उन्होंने संघ और श्रावकों की सुरक्षा एवं संरक्षण में जो सक्रिय भूमिका निभाई वह वर्णनातीत है। तेरापंथ धर्मसंघ के श्रावकों के योगदान में श्री सेठिया जी का यह योगदान सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

जैन विश्व भारती की प्राथमिक भूमिका से लेकर इस संस्था के प्रत्येक कार्य से वे सर्वात्मना भाव से जुड़े रहे। लगभग 10 वर्षों तक वे जैन विश्व भारती के ट्रस्टी के रूप में संस्था के विकास और विस्तार के लिए कार्य करते रहे और इसे नए आयाम दिए। उनके उर्वर तथा तलस्पर्शी चिंतन ने जैन विश्व भारती को आचार्य तुलसी के सपनों की कामधेनु बनाने में अहर्निश भूमिका निभाई है। जैन विश्व भारती की नींव से शिखर की गतिमान यात्रा में उनका योगदान मील के पत्थर के रूप में प्रमाणित हुआ है। जैन विश्व भारती के प्रति उनके आत्मीय लगाव को अनुभव कर आचार्य तुलसी ने कई बार फरमाया कि श्रीचंद रामपुरिया और खेमचंद सेठिया जैन विश्व भारती के माता-पिता स्वरूप हैं। सेठिया जी की इस विलक्षण नेतृत्व क्षमता से तेरापंथ धर्मसंघ की अन्य संस्थाएँ – अणुव्रत न्यास, जय तुलसी फाउंडेशन, पारमार्थिक शिक्षण संस्था, महासभा आदि प्राणवान बनी हैं।

संयमित और सादगीपूर्ण जीवन शैली के धारक, सेवाभावी श्री खेमचंद सेठिया ने धर्मसंघ की सर्वतोमुखी सेवा की है। श्रद्धा बल, चरित्र बल एवं मनोबल की त्रिपदी के संयोग से उन्होंने धर्मसंघ की श्रीवृद्धि में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।श्री से ठियाके म हनीयक ार्योंअ ौरअ भूतपूर्वस ेवाओंक ा मूल्यांकनक रतेहु एउ न्हें 'शासनसेवी', 'समाजभूषण' और 'भारतीभूषण' जैसे महत्वपूर्ण अलंकरणों से अलंकृत किया गया।

ऐसे संघनिष्ठ, सेवानिष्ठ और श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री खेमचंद जी सेठिया की अनुत्तर सेवाओं से जैन विश्व भारती धन्य एवं गौरवान्वित रही है। जैन विश्व भारती परिवार उनके स्वस्थ, सानन्द और संपन्न जीवन की मंगलकामना करता है।

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च 2012

वक्त

धर्मचंद चौपड़ा
पूर्व अध्यक्ष, जैन विश्व भारती

इतिहास ने बनने वाले इतिहास के कान में कहा और समाप्त हो गया। नए इतिहास ने इतिहास सुना और स्वयं इतिहास बन गया।

कितने ही फूल खुशबू बिखेर कर समय की चौखट पर चढ़ गए। कितनी ही लहरें सागर तट से टकराकर समय की गोद में विलीन हो गईं।

कितने ही गीत होठों से निकले और समय क्षितिज में गुम हो गए।

कितने ही आसमां को जमीं खा गई और कितने ही कद्दावर बौने हो गए। कितनों ने लूटा और कितने ही लुट गए।

कितने ही कालजयी इतिहास पुरुष पृष्ठों में समा गए।

कितनों के जन्म दिन मनाए और कितनों को श्रद्धांजलि दी।

कितनों ही ने भरपेट खाया और कितनों को दो वक्त भोजन नसीब नहीं हुआ।

कितनों के होंठ मुस्कुराए, कितनों की आँखें रोईं। कितनों ने तालियाँ पीटीं और कितनों ने छातियाँ पीटीं।

वक्त मनुष्य का खामोश पहरुआ है पर वह न स्वयं रुकता है और न किसी को रोकता है। वह खबरदार करता है और दिखाई नहीं देता।

कोई उससे बलवान नहीं, कोई उससे धनवान नहीं।

कितनों ने फटे पैबंद सी दिए और कितनों के बखिए उखाड़ दिए। कितनों की कालिख धो दी और कितनों के लगा दी।

वह चलता गया, न तेज, न धीमा, न खुश, न नाराज। न किसी से राग और न किसी से द्वेष।

भगवान महावीर की वाणी को अपने में आत्मसात किए समय यही कहता रहा कि समभाव और समदृष्टि रखते हुए चलते रहो। न रुकना, न सोना।

खणं जाणहि – समय को पहचानो।

पण्ण समिक्खए – प्रज्ञा से देखो।

सच्चं लोयम्मि सारभूयं – सत्य लोक में सारभूत है।

मा पमायए – प्रमाद मत करो।

सूर्य उदय होता है और ढल जाता है। शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष आते-जाते रहते हैं। कैलेंडर बदल जाता है। 1 जनवरी 31 दिसंबर को पीछे छोड़ती है पर 31 दिसंबर फिर दौड़ कर आ जाता है। तू प्रतिपल बूढ़ा हो रहा है प्रतिपल इतिहास हो रहा है। भीतर देख। जागृत रह। यही जीवन है। यही सत्य है।

संबोधि

स्थैर्य प्रभावना भक्तिः, कौशलं जिनशासने।
तीर्थसेवा भवन्त्येता, भूषाः सम्यग्दृशो ध्रुवम्।।

धर्म में स्थिरता, धर्म का महत्व बढ़े वैसा कार्य करना, धर्म या धर्मगुरु के प्रति भक्ति रखना, जैन शासन में कौशल प्राप्त करना और चतुर्विध संघ को धार्मिक सहयोग देना – ये सम्यक्त्व के पाँच भूषण हैं।

कामधेनु जैन विश्व भारती

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च 2012

निष्ठाशील कर्मी : श्री बाबूलाल गुर्जर

जैन विश्व भारती के निर्माण से लेकर वर्तमान आकार को प्राप्त करने में संस्था के कर्मियों की उल्लेखनीय भूमिका रही है। जैन विश्व भारती के ऐसे निष्ठाशील और समर्पित कर्मियों की श्रृंखला में एक कर्मी हैं – श्री बाबूलाल गुर्जर।

मूलतः लाडनूं निवासी श्री बाबूलाल गुर्जर वर्ष 1986 में जैन विश्व भारती से जुड़े और विगत 26 वर्षों से वे यहाँ काम करर हेहँ ।ऱ्हाँअ ंनेरु ्प ूर्वक ेज ोधपुरर ेलवे ्ेक ्ेरत्र ्ेि कतुअ पर्नी पताज ्ीके द ेहावसानके ्बादक ेज ोधपुर छोड़कर लाडनूं आ गए। बाबूजी शंकरलाल मेहता के समय तुलसी अध्यात्म नीडम् में इनकी नियुक्ति सर्वप्रथम बागवान के रूप में हुई और बाद में इन्होंने यहीं रसोइए का कार्य भी किया। कालांतर में अपेक्षानुसार विभिन्न विभागों में इनका स्थानांतरण होता रहा, जहाँ इन्होंने पूरी निष्ठा एवं समर्पण भाव से कार्य किया। जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान के विभिन्न शिविरों की समायोजना, विहार के दौरान चारित्रात्माओं की सेवा आदि कार्यों में भी इनका प्रशंसनीय योगदान रहा है। जैन विश्व भारती के प्रति इनकी निष्ठा और समर्पण भाव का मूल्यांकन करते हुए वर्ष 2011 में जैन विश्व भारती के स्थापना दिवस समारोह में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी वर्ग में श्री गुर्जर को सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी के रूप में सम्मानित किया गया। वर्तमान में जीवन विज्ञान अकादमी में आदेशपाल के रूप में कार्यरत श्री बाबूलाल गुर्जर जैसे निष्ठाशील कर्मी को पाकर यह संस्था गौरव की अनुभूति करती है।

अभिनंदन! अभिवंदन

मुनिश्री कीर्तिकुमारजी के जैन विश्व भारती के प्रभारी नियुक्त होने पर

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा दिनांक 11 मार्च, 2012 को मुनिश्री कीर्तिकुमारजी के जैन विश्व भारती के प्रभारी के रूप में मनोनीत किए जाने पर जैन विश्व भारती परिवार मुनिश्री का हार्दिक स्वागत-अभिवंदन करता है। जैन विश्व भारती मंगल भावना करती है कि मुनिश्री के प्रातिभ ज्ञान, उर्वर चिंतन और सृजनात्मक सोच से जैन विश्व भारती निरंतर प्रवर्धमान रहते हुए समाज की कामधेनु के रूप में विकास के नए शिखरों पर आरूढ़ होगी। मुनिश्री कीर्तिकुमारजी के प्रेरक मार्गदर्शन और कुशल निर्देशन में जैन विश्व भारती की टीम नई ऊर्जा के साथ संस्था की विविध आयामी गतिविधियों को नई दिशा प्रदान करेगी।

पूज्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए जैन विश्व भारती परिवार पुनः मुनिश्री कीर्तिकुमार जी का जैन विश्व भारती के प्रभारी के रूप में हार्दिक अभिवंदन एवं अभिनन्दन करती है।

जैन विश्व भारती कामधेनु

वर्ष 2
अंक 5
जनवरी-मार्च 2012

कुछ लाभदायक बातें

सदा डरो	किससे?	पाप से।
चुप मत बैठो	कहाँ?	धर्म प्रचार में।
चले चलो	कहाँ	सत्संग में।
गूंगे बहरे बना जाओ	कहाँ पर?	निन्दा एवं निन्दक के स्थान पर।
दूर भगाओ	किसको?	क्रोध एवंआलस्य को।
धिक्कार दो	किसको?	अहंकार को।
बहादुर बनो	किसमें?	क्षमा धारण में।
देखकर मत हँसों	किसको?	दीन-दुखियो को।
आदर करो	किसका?	गुरुओं एवं महापुरुषों का।

आदित्य शर्मा
कक्षा- 3, विमल विद्या विहार

एक चीज

जीतने के लिए कोई चीज है तो	**प्रेम**
पीने के लिए कोई चीज है तो	**क्रोध।**
खाने के लिए कोई चीज है तो	**गम।**
देने के लिए कोई चीज है तो	**दान।**
दिखाने के लिए कोई चीज है तो	**दया।**
लेने के लिए कोई चीज है तो	**ज्ञान।**
कहने के लिए कोई चीज है तो	**सत्य।**
रखने के लिए कोई चीज है तो	**इज्जत।**
फेंकने के लिए कोई चीज है तो	**ईर्ष्या।**
छोड़ने के लिए कोई चीज है तो	**मोह।**

मंथन जैन
कक्षा- 4, विमल विद्या विहार

स्वप्न परी

मालविका सुथार
कक्षा-8
महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर

पेंसिल से निर्मित गुलाब का फूल

कार्तिक धनावत
कक्षा - 6
महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर